

एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने

हेमराज भट्ट



An Azim Premji University Publication



एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने

हेमराज भट्ट

एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने

हेमराज भट्ट

Ek Adhyapak Ki Diary Ke Kuchh Panne
Hemraj Bhatt

© Hemraj Bhatt



Published by:

Azim Premji Univesity
Pixel Park, B Block, PESSE Campus,
Electronic City, Hosur Road,
(Beside NICE Road), Bangalore 560 100.
Ph: +91 80 6614 4900/01/02
email: info@azimpremjifoundation.org
web: www.azimpremjiuniversity.edu.in

Designed & produced by:

New Horizon Media Private Limited
177/103, Ambal's Building, 1st Floor,
Lloyds Road, Royapettah, Chennai 14.
Ph: +91 44 4200 9601 • Fax: +91 44 4300 9701
support@nhm.in • www.nhm.in

आभार

श्री हेमराज भट्ट की इस डायरी को सामने लाने में अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन तथा अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय के सदस्यों के अलावा अन्य कई लोगों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है। खासतौर पर –

- ♣ हेमराज के काम को उनकी फाइलों से बाहर लाने और यह सुनिश्चित करने में कि वह एक व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँच पाए *अनंत गंगोला, अम्बरीश बिष्ट, एस. गिरिधर* और पूरी *उत्तराखंड टीम* ने पहल की।
- ♣ हेमराज की इस डायरी को प्रकाशन योग्य बनाने में *राजेश उत्साही* ने अपने संपादकीय कौशल और अनुभव का उपयोग किया। साथ ही प्रकाशन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए बहुमूल्य सुझाव दिए।
- ♣ डायरी के आकर्षक कवर तथा अन्य साज-सज्जा में *जयश्री मिश्रा* नायर ने अपनी कला दृष्टि का उपयोग किया।
- ♣ डायरी के हिन्दी तथा अँग्रेजी संस्करणों के विभिन्न संपादकीय तथा प्रकाशन के प्रबंधकीय पक्षों का समन्वयन किया *आकाशी कौल* ने।
- ♣ हेमराज के जीवन के विभिन्न पहलुओं के बारे में जानकारी दी *चन्द्रमोहन भट्ट, सुश्री हेमलता तिवारी* (व्याख्याता,एससीईआरटी,उत्तराखंड), *सुश्री मीना मनराल* (कुमाऊँ विश्वविद्यालय) तथा हेमराज की अभिन्न मित्र *सुश्री रेखा चमोली* (सहायक शिक्षक) ने।
- ♣ यह आभार ज्ञापन अधूरा रहेगा यदि इस बात का जिक्र नहीं किया जाए कि इस डायरी को अँग्रेजी में अनूदित करने का महत्वपूर्ण बीड़ा उठाया था राजस्थान की जानी-मानी शैक्षिक संस्था संधान की निदेशक *डॉ.शारदा जैन* ने।
- ♣ साथ ही डायरी के अँग्रेजी संस्करण में आमुख तथा हेमराज की कविताओं के *आकाशी कौल* द्वारा किए गए अँग्रेजी अनुवाद को मूल हिन्दी के निकट रखने में *रमणीक मोहन* ने बहुमूल्य सुझाव दिए।

बालसखा की याद.....

26 नवंबर 2008 को मैं किसी काम से उदयपुर में था कि साथी अम्बरीष से दूरभाष पर हेमराज भट्ट की सड़क दुर्घटना व उसमें उनके बिछुड़ने का समाचार मिला। समाचार पाते ही रोम-रोम कम्पित हो उठा और शब्द जड़-से हो गए। जब कुछ चेतना में लौटा तो बदहवास-सा यहाँ-वहाँ फोन लगाने लगा कि शायद कहीं से सूचना मिले कि यह समाचार भ्रामक है, किन्तु दुर्भाग्यवश सभी जगह से घटना की पुष्टि होती चली गई।

इस घटना के कई दिनों बाद तक मैं अपने आप को सहज नहीं कर पाया और हेमराज भाई के साथ गुजारे तमाम पल लगातार जेहन में रह-रहकर नाचते रहे। उनका इस तरह से हमारे बीच से चले जाना साथियों को एक बैचेनी देकर खालीपन दे गया। हेमराज एक सौम्य, धीर-गम्भीर, बेहद साधारण से लगने वाले एक सुदूर पहाड़ी अंचल के एकल शिक्षकीय विद्यालय में सहायक शिक्षक थे। परिचय के प्रारंभ में सामान्य से प्रतीत होने वाले इस व्यक्ति से ज्यों-ज्यों परिचय आगे बढ़ता, कोई भी व्यक्ति प्रभावित होता चला जाता। 'बालसखा' उपनाम से बच्चों के लिए जिन कहानियों का वे निरन्तर बिना थके सृजन करते चले जा रहे थे, उनमें बालमन को छूने की अद्भुत क्षमता है।

उदयपुर से लौटने के बाद हेमराज भट्ट के घर जाने और उनके परिजनों से मिलने की तीव्र उत्कंठा मन में थी। हेमलता और अम्बरीष से जब इस इच्छा को साझा किया तो पाया कि उनके मन में भी यही विचार पल रहा है। फिर एक अवकाश का दिन तय करके हम कुछ साथी उनके घर धनेटी चल दिए। पूरा सफर हेमराज भाई के साथ बिताए हुए लम्हों को याद करते बीता। पूरे सफर में चर्चाएँ हेमराज भट्ट के ऊपर एक फिल्म की तरह चलतीं रहीं। (एक ऐसी फिल्म जिसका कोई मध्यांतर नहीं और न कहीं कोई अंत। ये फिल्म चल रही है, अब भी चलती रहेगी और आगे भी।)

यात्रा में हेमराज के भाई चन्द्रमोहन हमारे साथ थे। स्वाभाविक था हम सब उस जगह पर रुके, जहाँ दुर्घटना हुई। एक संकरी-सी सड़क और एक गहरी-सी खाई। सड़क के किनारे खोखे-सी प्रतीत होती मैक्स को देख रहे थे। यहाँ से जब आगे बढ़े तो दृश्य की भयावहता और उसमें गुम हुए अपने मित्र की यादों ने हम सबके होंठ सी दिए थे। वहाँ से उनके घर तक का सफर निःशब्द ही कटा।

हम सभी उनके परिजनों के मध्य अपरिचित ही थे। उनके घर जाकर और उनके परिजनों से मिलकर भी चुप्पी स्वयं को तोड़ पाने का साहस नहीं कर पाई। हेमराज के छोटे भाई गिरिराज ने इस असहज चुप्पी को तोड़कर अश्रुपूरित आँखों और रूँधे गले से न जाने किस उम्मीद में हम लोगों से आग्रह किया कि उनके भाई के काम को बरबाद नहीं होने देना है, लोगों तक पहुँचाना है। तब हम यह नहीं जानते थे कि यह कैसे होगा? बस, इस आग्रह को स्वीकारने के सिवाय और कुछ नहीं था। उस शाम वहीं रुके और शुरू हुआ एक प्रयास, उनके लेखन के समुद्र में गोते लगाने का। हेमराज का लैपटॉप, उसमें बने अलग-अलग व्यवस्थित फोल्डर्स, उनका एक कमरे का घर, उसमें किताबें, डायरियाँ, रजिस्टर और प्रकाशित रचनाओं की कतरनों से अटी फाइलों को हम सिलसिलेवार खोलते-टटोलते चले गए। इस प्रयास से जो बात उद्घाटित हुई, वह थी कि हम तो हेमराज को बहुत थोड़ा ही जानते थे। सिर्फ बालकहानियाँ ही नहीं थीं उस साहित्य के मीठे पानी के समुद्र में, एक शिक्षक की डायरी, कुछ प्रेम से पगी कविताएँ, विभिन्न सामयिक विषयों पर लेख और सम्पादक के नाम पत्र जैसी असाधारण चीजें विरासत के रूप में उपलब्ध थीं। भगवद्गीता का गढ़वाली में काव्यानुवाद, प्रजापति ब्रह्मकुमारी आश्रम से जुड़ी आध्यात्मिक रचनाएँ और भी न जाने क्या-क्या था।

हम सबका मन विद्यालय में जाने को हुआ जहाँ हेमराज पदस्थ थे। यह विद्यालय कोई सामान्य विद्यालय नहीं था। यहाँ बच्चों के पास सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उनका हाथ बंटाने एक शिक्षक नहीं 'बालसखा' मौजूद था। अवकाश की वजह से विद्यालय तो बंद था। विद्यालय खुला हो या बंद, विद्यालय में पदस्थ शिक्षकों के परिचय का कोई न कोई सूत्र विद्यालय के परिवेश में अंकित रहता है। बालसखा के विद्यालय में 'सा विद्या या विमुक्तये', 'तमसो माँ ज्योतिर्गमय' जैसी सुंदर अपितु प्राथमिक स्तर के बच्चों की समझ से परे की सूक्तियाँ अंकित नहीं थीं, वरन लिखा था-'नन्हे-मुन्ने मित्रों का विद्यालय में स्वागत है।'

अपरिचित आगंतुकों को देखकर आस-पड़ोस के कुछ ग्रामजन भी वहाँ आ गए। गाँव के बालक बता रहे थे कि बालसखा बच्चों को अपना दोस्त मानते थे। उन्होंने अपने स्कूल में बच्चों के साथ बैठने के लिए रूई की गद्दियाँ बनाई थीं। बात खाली एक सुविधा की तरह इन गद्दियों को उपलब्ध कराने भर की नहीं थी। एक-एक गद्दी उन्होंने अपने हाथों से तैयार की थी। हम चमत्कृत थे इस तरह की आत्मीयता, प्रेम और इस तरह की संवेदनशीलता को देखकर।

आमतौर पर यह देखने में आता है कि पहले तो बिरले ही लोग लीक से हटकर कुछ करने का प्रयास करते हैं। फिर जो थोड़ा भी कुछ कर पाते हैं, वे उसका बखान करते नहीं थकते। किन्तु हेमराज के विद्यालय में जाकर जो बातें पता लगीं वे कभी हेमराज भाई ने अपने मुँह से नहीं कही थीं।

यहाँ आप हेमराज की डायरी के कुछ पन्ने पढ़ेंगे। बीच-बीच में हेमराज की ही कुछ कविताएँ भी हैं। कविताएँ

बताती हैं कि उनका कवि मन अपने सामाजिक परिवेश से कितने गहरे रूप से जुड़ा था। डायरी के पन्नों पर आप भारत के दूरदराज के गाँव में एक शिक्षक की भूमिका में हेमराज के दिन-प्रतिदिन के संघर्षों की दास्तान पाएँगे। व्यवस्था के भीतर रहते हुए व्यवस्था से उनकी जो लड़ाई थी, उसका बयान करते हुए यह डायरी हमारा ध्यान उन समस्याओं की ओर आकर्षित करती है, जिनकी जड़ें इतनी गहरी हैं कि उनका उपयुक्त समाधान ढूँढने में शायद पीढ़ियाँ गुजर जाएँ।

हम केवल यही उम्मीद कर सकते हैं कि उनके विचारों की स्पष्टता और उनकी अपेक्षाओं की सरलता हमारी स्मृति में अमिट छाप छोड़ेगी। उम्मीद यह भी है कि उनके विचार हमें प्रेरित करेंगे ताकि हम उन उपायों की डगर पर दृढ़ता से कुछ कदम चल पाएँ जिसका प्रयास हेमराज ने अपने संक्षिप्त जीवनकाल में किया था।

– अनन्त गंगोला

10 अप्रैल, 2007

आज एन.पी.आर.सी. में मासिक बैठक में शामिल हुआ। विद्यालय बंद करना पड़ा। एन.पी.आर.सी. स्तर पर मासिक बैठक एक प्रकार का मजाक और शिक्षकों का समय बर्बाद करने जैसा है। आज एन.पी.आर.सी. समन्वयक श्री बिष्ट जी अनुपस्थित थे। प्रा.वि.गढ़ में व्यवस्था देख रहे अध्यापक श्री देवेन्द्र जी द्वारा मात्र दो सूचनाएँ दी गईं और बैठक में उपस्थित आधे अध्यापकों ने परिचारक को स्कूल की सूचनाएँ (अध्यापक उपस्थिति, एम.डी.एम., और बिस्कुट वितरण की सूचना) पकड़ा कर बैठक की इतिश्री मान ली।

यदि अच्छा माहौल निर्मित किया जाए तो मासिक बैठक का दिन अध्यापकों के लिए एक अच्छा दिन हो सकता है। संभव है कि किन्हीं एन.पी.आर.सी./ सी.आर.सी. में ऐसा होता भी हो। इस दिन हम सभी अध्यापक दैनिक शिक्षण क्रियाकलापों के सार्थक पहलुओं पर विचार विमर्श कर सकते हैं। इस बैठक में विद्यालयों के प्रधान अध्यापक या प्रभारी प्रधान अध्यापक उपस्थित होते हैं। बैठक में अगर सार्थक चर्चा का माहौल निर्मित किया जा सके तो सहायक अध्यापकों को भी एन.पी.आर.सी. स्तर पर माह में एक दिन आपसी विचार विनिमय का अवसर मिलना चाहिए। पर ऐसा तभी संभव है जब एन.पी.आर.सी. समन्वयक स्तरीय समन्वयन की योग्यता रखता हो।

16 अप्रैल, 2007

मैं आज आधा घण्टा विलंब से पहुँचा तब तक बच्चों ने प्रार्थना कर ली थी और मैदान में जमीन पर अपनी-अपनी कक्षाओं में बैठ गए थे। स्वयं सेवक श्रीमती प्रतिभा कक्षा 1, 2, 3 के बच्चों की उत्तर पुस्तिकाओं पर कुछ लिखवा रही थी।

आज से मैंने अपने साथ एक स्वयं सेवक शिक्षिका की व्यवस्था कर ली है। जिसे मैं स्वयं मानदेय दूँगा।

पिछले 15 दिनों से मैं महसूस कर रहा हूँ कि मल्टीग्रेड टीचिंग (बहुकक्षा शिक्षण) एक अव्यवहारिक प्रयोग है। यह सैद्धांतिक स्तर पर जितनी सरल और आकर्षक लगती है व्यवहार में उतनी ही जटिल और अध्यापक को थका देने वाली प्रक्रिया है। उस स्थिति में और अधिक जब पाँचों कक्षाओं के बच्चों का स्तर उनकी कक्षा से बहुत नीचे हो। यह शौकिया और एक तरह से स्वाद बदलने के लिए मास में एक-दो बार तो हो सकता है परन्तु दैनिक क्रिया-कलाप का हिस्सा नहीं बन सकता।

बहुकक्षा शिक्षण के लिए न सिर्फ वृहद तैयारी की जरूरत है, शिक्षक में भी बच्चों जैसी ऊर्जा, स्फूर्ति, सक्रियता की आवश्यकता है। बहुकक्षा

शिक्षण केवल उस स्थिति में सफल हो सकता है जब अध्यापक घर पर 2-4 घंटा मेहनत करे और अगले दिन गतिविधियों के मॉड्यूल तैयार कर विद्यालय में प्रवेश करे।

आज विद्यालय में तीन अभिभावक और एक पड़ोसी स्कूल की शिक्षिका आईं। अभिभावक के साथ नए प्रवेश/टी.सी. काटने पर चर्चा में 1:30 घण्टा वक्त खर्च हुआ और इस अवधि में कक्षा खाली छोड़नी पड़ी।

18 अप्रैल, 2007

आज सुबह से वर्षा हो रही है। बच्चे 8:20 तक विद्यालय पहुँचे। आज प्रार्थना नहीं करवाई। 8:35 से शिक्षण कार्य शुरू हुआ। सभी कक्षाओं में वर्षा के कारण उपस्थिति कम है। आज कुल 35/51 बच्चे उपस्थित हैं।

प्रतिभा ने 1 से 3 तक की कक्षाओं को देखा। मैं कक्षा 4 व 5 में केंद्रित हूँ। सभी पंजीकृत 18 बच्चों का स्तर सभी विषयों में कक्षा 2 के स्तर का है। मैं इस बात पर केंद्रित हूँ कि हिंदी, गणित और सामान्य अध्ययन/विज्ञान में बच्चों के फण्डामेंटल कन्सैप्ट स्पष्ट करते हुए आगे बढ़ा जाए।

गीता, संगीता, शिवहरि, चित्रा, सुमन, सन्तोषी, प्रतापसिंह और गजेशिंह 8 बच्चे काफी कमजोर हैं। 2 अंकों की संख्या भी नहीं पहचान पाते हैं और छोटे-छोटे शब्द भी नहीं पढ़ पाते हैं।

मेरा प्रयास है कि संख्याएँ पढ़ने-लिखने और शब्द पढ़ने और लिखने का कौशल विकसित करते हुए आगे बढ़ा जाए।

मैंने 168 परिचित शब्दों की एक सूची तैयार की है जिन्हें बच्चे दैनिक अधिकाधिक प्रयोग करते हैं। इस सूची को 28 नं. के फॉण्ट में A4 पर प्रिंट निकाल कर बच्चों को बाँट देता हूँ और पढ़ने का अभ्यास कराता हूँ। बेशक यह गतिविधि कक्षा 1-2 में प्रयोग होनी चाहिए जिसे मैं कक्षा 4-5 में प्रयोग कर रहा हूँ।

आज मध्यान्तर से पूर्व इस सूची को पढ़वाया और इसी से 30 शब्दों को श्रुतलेख के रूप में लिखवाया। आज उपस्थित 12 बच्चों में से 1 बच्चे ने 24, दो बच्चों ने 15-15, दो ने 9-9, एक ने 8, एक ने 5 और एक ने 2 शब्द सही लिखे बाकी ने एक भी शब्द सही नहीं लिखा।

गणित में ऊपर लिखित 8 बच्चों को छोड़कर शेष 10 बच्चे दो अंकों की संख्या को इकाई, दहाई की समझ के साथ पढ़ने और विस्तारित रूप में लिखने लगे हैं।

आज किसी बच्चे को डाँटा या मारा नहीं और धैर्यपूर्वक समझाया तब भी बहुत मेहनत करनी पड़ रही है। ये 8 बच्चे अब भी नहीं समझ पा रहे हैं। पूछने पर बच्चे मुँह ताकते रहते हैं। सुरेन्द्र, अतरसिंह, रमेश, कमलेश्वरी, सुनीता, नैनदेई और धृपाल बात को जल्दी पकड़ते हैं।

21 अप्रैल, 2007

अपने ही स्कूल के उन बच्चों, जिनके साथ रहते हुए कागजी तौर पर तीन साल होने को हैं, के साथ गंभीरतापूर्वक काम करते हुए आज 20 वें दिन में ही ऐसा लग रहा मानो मैं किसी बिल्कुल नए स्कूल और नए बच्चों के साथ काम कर रहा हूँ। बच्चों की सचमुच इतनी कमजोर स्थिति के लिए लोग अध्यापकों को दोष देते हैं तो वे किसी सीमा तक गलत भी नहीं हैं।

1 मई, 2007

20 अप्रैल से 30 अप्रैल तक मतदाता सूची संक्षिप्त पुनरीक्षण कार्य में घर-घर संपर्क किया। इस अवधि में स्वयं सेविका श्रीमती प्रतिभा ने शिक्षण कार्य देखा। मैं यद्यपि 1-2 घण्टे के लिए स्कूल में आ जाता था पर बाहरी व्यवस्था देखने के अलावा मैंने बच्चों के साथ कोई प्रतिभाग नहीं किया।

इस दौरान विद्या केन्द्र डौरा की कार्यकर्ती, शिक्षा आचार्य की व्यवस्था भी प्रा.वि. में थी परन्तु मैंने देखा कि उसकी पढ़ाने में रुचि कतई नहीं है। उसने बच्चों को श्यामपट पर एक पंक्ति लिखकर दी, जैसे – सदा सत्य बोलो, स्वास्थ्य ही जीवन है आदि जैसे वाक्य और बच्चों से इन्हें अपनी उत्तर पुस्तिकाओं में उतारने को कहा। दस दिन की अवधि में बच्चों की कापियों पर बस ऐसे ही वाक्य लिखवाए और अपने बच्चों को समझाली रही।

दूसरी ओर बच्चों के साथ रहने का एक दिन का भी क्रम टूटता है तो वह बच्चों की प्रगति के क्रम को तोड़ता है। बहुत दिनों तक बच्चों के साथ न रहने पर वे पिछली बातें भूलने लगते हैं, गृहकार्य के प्रति उदासीन हो जाते हैं और अनुपस्थित रहने लगते हैं।

इन दस दिनों में उपस्थिति का प्रतिशत आधा हो गया है। 1 मई को मात्र 18 बच्चे उपस्थित रहे। मैं कक्षा 4-5 पर केंद्रित हूँ। दोनों कक्षाओं के बच्चे संख्याओं की पहचान (हजार तक) पर सिमटे हैं। $(9 + 9 = 18)$ बच्चों में से केवल 7 बच्चे हजार तक की संख्या पहचान पा रहे हैं। शेष बच्चे 100 तक की संख्या नहीं पढ़ पा रहे हैं। लगातार मेहनत के बाद भी अपेक्षित प्रगति नहीं है। पिछड़ रहे बच्चों में वे बच्चे हैं जो लगातार अनुपस्थित रहते हैं।

आज गिनतारे पर संख्या पहचानने, पढ़ने का अभ्यास कराया। गिनतारे से बच्चे शीघ्र समझ रहे हैं। गिनतारे से ही स्थानीय मान का संबोध समझाया।

4 मई, 2007

आज की उपस्थिति बहुत कम थी। गाँव में चल रही भागवत के कारण।

आज से न्याय पंचायत संसाधन केंद्र भेटियारा (स्थल रा.इ.का.धौन्तरी) में अध्यापक क्षमता संवर्धन सेवारत प्रशिक्षण में शामिल हुआ। पहले दिन का प्रशिक्षण औपचारिक भर रहा। सारे प्रशिक्षण मात्र औपचारिक हो गए हैं। प्रशिक्षण में मात्र एक संदर्भदाता है। दूसरे संदर्भदाता चुप बैठे रहते हैं। पहला दूसरे को बोलने का मौका ही नहीं देता। इसका कारण भी अजीब है, पहले एम.टी. दक्ष हैं और उनके पास एम.टी. के रूप में कार्य करने का लंबा अनुभव है। डी.पी.ई.पी. के अंतर्गत उन्होंने सफल प्रशिक्षण दिया है।

दूसरा एम.टी. एक प्रकार से न्याय पंचायत समन्वयक का चमचा है। उसका झोला ढोता है, और वक्त बेवक्त उसकी तरफदारी करता है, विवादों में उसका बचाव करता है। इसी अनुकंपा पर न्याय पंचायत समन्वयक ने इन नए एम.टी. की व्यवस्था सड़क के प्राइमरी स्कूल में करा दी है। वैसे वे सड़क से 5 किमी दूर एक जूनियर हाईस्कूल में कार्यरत हैं। जाहिर है समन्वयक की अनुकंपा से वे पहली बार एम.टी. बने हैं तो अपनी ठसक बनाए रखना चाहते हैं। लगातार निरुद्देश्य, अनावश्यक और अप्रासंगिक बोलते जाते हैं, कुछ भी।

आज दिनांक 13 जुलाई 2007 को बी.आर.सी. डुंडा में सेवारत शिक्षक प्रशिक्षण में प्रतिभाग किया। यह प्रशिक्षण गत सत्र के प्रशिक्षणों से छूटे हुए प्रतिभागियों के लिए आयोजित किया गया है। प्रशिक्षण में कुल 32 प्रतिभागी प्रतिभाग कर रहे हैं। प्रशिक्षण का विषय “पाठ्य पुस्तकों में कठिन स्थल” है। इस प्रशिक्षण के मॉड्यूल में अनेक विषयों क्रमशः हिंदी, गणित, अंग्रेजी, संस्कृत, विज्ञान और सामाजिक विषयों को सम्मिलित किया गया है। प्रशिक्षणदाता केवल एक हैं श्री बिष्ट जी, जो जूनियर हाईस्कूल में सहायक अध्यापक हैं। श्री बिष्ट जी गणित, विज्ञान के अध्यापक हैं और प्रशिक्षण देने की उनकी शैली से लगता है कि इन दोनों विषयों पर उनकी अच्छी पकड़ है।

आज सत्र के आरंभ में अपवर्त्य और अपवर्तक के बारे में बताया गया। लेकिन प्रस्तुतिकरण एक तरफ था। चर्चा और प्रतिभागियों में सक्रियता का माहौल नहीं बन पाया। संबंधित विषय को प्रशिक्षणदाता द्वारा ठीक उसी तरह समझाया जा रहा है जैसे एक पारंपरिक अध्यापक गणित के सवालों को अपनी कक्षा में समझाता है।

हाल ही डायट में आयोजित एम.टी. ट्रेनिंग की तुलना में मैंने देखा कि यहाँ पर प्रतिभागी अधिक सक्रिय और जिज्ञासु हैं। वे धैर्यपूर्वक सुन रहे हैं और अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं। जिज्ञासु और धैर्यवान प्रतिभागियों में प्रशिक्षण को बेहद रुचिकर बनाया जा सकता है अगर एम.टी. थोड़ा अध्यवसायी हो और जरा सा होमवर्क करके आए। आमतौर पर हम एक रूढ़ प्राइमरी टीचर की तरह पाठ्यपुस्तक के आस-पास ही मंडराते रहते हैं। यहाँ भी एम.टी. छपे मॉड्यूल के बाहर जाना जैसे लक्ष्मण रेखा लांघने बराबर मानता है।

लघुत्तम समापवर्त्य और महत्तम समापवर्तक गुणनखंड और भागफल विधि से निकालने की विधि समझाने के साथ ही आज का सत्र यहीं पर समाप्त हो गया।

मैं अपवर्त्य और अपवर्तक शब्दों को लेकर हमेशा कन्फ्यूज रहा हूँ। इसका एक कारण शायद यह है कि मेरे विद्यार्थी इस स्तर के नहीं हैं और मैं जिन भी विद्यालयों में रहा मैंने कभी बच्चों को लघुत्तम या महत्तम नहीं सिखाया। कारण हम जोड़-घटाना से आगे कभी नहीं बढ़ पाए पाँचवीं कक्षा में भी।

28 जुलाई, 2007

आज स्कूल में अभिभावकों की बैठक रखी थी। बैठक का समय पहले दिन बच्चों को दस बजे बताया था किंतु अभिभावक प्रातः 8 बजे से ही आने लगे थे। सबसे पहले दो माताएँ आईं और, "भैंस के पास दूर डाँडा जाना है" कह कर जाने का आग्रह करने लगीं। मैंने रुकने का आग्रह तो किया पर वे घर के काम के बोझ का हवाला देती रहीं और "आप नहीं मानते हैं तो रुक ही जाते हैं जैसे हमें जाने देते तो अच्छा था।" कह कर चली गईं मैंने भी दुराग्रह पूर्वक उन्हें नहीं रोका उनके गृहस्थी के काम की जटिलता और उसके बोझ की मजबूरी को मैं भली प्रकार समझता हूँ।

इसी तरह चार और अभिभावक आकर चले गए। हमें आप पर विश्वास है, बच्चों को खूब डाँट-पीट कर रखिए। बच्चे हमारी नहीं मानते हैं गुरु जी का भय अलग ही होता है। इन्हें खूब पीटिए हम कुछ नहीं कहेंगे। हम तो गुरु जी की बहुत मार खाते थे, जैसे वाक्य बोल कर चले गए। उन्होंने भी घरों के खूब सारे काम गिनाए।

साढ़े नौ बजे 20-25 अभिभावक, ग्राम प्रधान जी और क्षेत्र पंचायत के सदस्य आए। बरामदे में आगे पूरे साठ बच्चों को और पीछे अभिभावकों को बोरी और टाट पर बिठाया। सभी का स्वागत संबोधन किया और ग्राम प्रधान जी से बच्चों को बालिका प्रोत्साहन राशि से झोले, कापियाँ, ड्राइंग बॉक्स और पेंसिल रबर वितरित करवाए।

1 अगस्त, 2007

आज प्रातः 7 बजे उत्तरकाशी से चल कर 9 बजे स्कूल पहुँचा। कल शाम पाँच बजे तक लर्निंग गारंटी कार्यक्रम में व्यस्त रहा।

विद्यालय में शिक्षा आचार्य श्रीमती बिमला और दोनों स्वयं सेवक शिक्षिका आ चुकी थीं और कार्यालय में तीनों आपस में बतिया रही थीं। मेरे आते ही वे सजग होकर बैठ गईं और कक्षा में जाने को उद्यत होने लगीं।

बच्चे कक्षाओं में व्यवस्थित बैठे थे और भोजन माता भोजन पका रही थी। चारों लोगों ने बैठकर यह निश्चय किया कि कौन किस कक्षा में क्या विषय पढ़ाएगा। बच्चों को चार स्थानों पर बिठाने का निश्चय किया।

भोजनावकाश के बाद तीनों शिक्षिकाएँ कक्षा में चली गईं। मैंने बच्चों को लेकर एक कक्ष साफ करवाया जिसमें बजरी और स्कूल का बेकार सामान और अन्य चीजें रखी हुई हैं।

आज मैंने किसी भी कक्षा में कोई भी विषय नहीं पढ़ाया। केवल कक्षा तीसरी में पर्यावरण अध्ययन में पढ़ाए गए पहले पाठ पर री-कैप करवाया। जब मैंने बच्चों पूछा कि मैंने अब तक तुम्हें क्या-क्या बताया तो केवल दो बच्चों ने अपेक्षित उत्तर दिए— सजीव और निर्जीव वस्तुएँ, भगवान और आदमी की बनाई हुई चीजें। बाकी बच्चों के उत्तर थे— कुर्सी, पत्तियाँ, टहनियाँ, आदमी, भैंस आदि।

मैंने इस कक्षा में लगातार तीन दिन तक चंदन शीर्षक का पाठ पढ़ाया और मानव निर्मित, प्राकृतिक वस्तुएँ और सजीव-निर्जीव के बारे में चर्चा कराई तथा इन अवधारणाओं को समझाने का प्रयास किया।

मैं बीस में से सोलह बच्चों से “प्राकृतिक” शब्द का स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण नहीं करवा सका। ऐसे में मैं झुंझला उठता हूँ। हालाँकि यह भाषागत समस्या है और यह यकीन मुझे था कि मेरी बात को बच्चे समझ रहे थे और पूछने पर अपेक्षित उदाहरण दे रहे थे। परंतु सभी बच्चों को अपने परिवेश में हिंदी के शब्द सुनने और बोलने के लिए न मिलने के कारण नितांत अपरिचित शब्दों का उच्चारण करने, उन्हें समझने और याद रखने में खासी मशक्कत करनी पड़ती है।

आज ठीक एक बजे बच्चों की छुट्टी की और मेरा सारा वक्त कमरों को व्यवस्थित करवाने में ही बीत गया।

घर आकर भोजन किया और तीन बजे अपराह्न तक विश्राम किया। तीन बजे से चार बजे तक कक्षा दो के बच्चों के लिए एक कहानी टाइप की और प्रिंट निकाल कर उसे लेमिनेट किया। इस कहानी “दो बकरियाँ” से कक्षा दो के बच्चों से उन बच्चों को पढ़वाने का अभ्यास कराऊँगा जिन्हें वर्णमाला भी ठीक से पहचाननी नहीं आ रही है। चार बजे विद्या मंदिर के आचार्य जी आए, एक घंटा उन्हें कम्प्यूटर सिखाया और फिर उनके साथ बाजार टहलने निकल गया।

साढ़े आठ बजे से डायरी लिखी। दस बजे डायरी पूरी की, कादंबिनी का अगस्त अंक पढ़ा और साढ़े दस बजे सो गया।

उसने हाँ कहा

मुझे खुशी हुई
उसने हाँ कहा
मुझे खुशी हुई,
उसने कई दिनों से ना नहीं कहा

नहीं हो सकेगा
टूट चुकी हूँ मैं
अब सम्भलना मुश्किल है,
कुछ भी नहीं कर पाऊँगी मैं
बहुत कठिन है सब
भाग्य में नहीं है मेरे
जाने और कितने
ये टूटन भरे वाक्य
जबान पर चढ़ गए थे उसकी
ना, नहीं मुश्किल, कभी नहीं
हो गए थे उसके तकिया कलाम

आज जब कहा उसने
कुछ सीखना चाहती हूँ
कुछ पढ़ना चाहती हूँ
कुछ गुनगुनाना चाहती हूँ
और चाहती हूँ लिखना एक गीत
तो मुझे लगा
आज मैं कहीं, शामिल हो गया हूँ
उसकी जिन्दगी में!

आज ठीक 7:15 पर विद्यालय पहुँचा। बच्चे आठ बजे तक विद्यालय में आए। आठ बजे प्रार्थना आरंभ हुई। बच्चों को पंक्ति में खड़ा कर बिमला और बिंदुलेश को आवश्यक निर्देश देकर मैं 8:05 पर प्रधान जी को मिलने उनके घर जा रहा था तो भोजन माता सड़क पर स्कूल आती हुई मिली। उसने अभिवादन किया। उसे "जाओ जल्दी से खाना पकाओ" कह कर मैं प्रधान जी को मिलने उनके घर चला गया। प्रधान जी से स्कूल में हो रहे निर्माण कार्य के बारे में आवश्यक विचार विमर्श करने के बाद मैं ठीक 9:15 पर स्कूल में लौट आया। स्कूल में आकर देखा तो भोजन माता अभी तक चूल्हे में आग जला रही थी। दस बजे तक खाना बन जाना चाहिए ताकि मध्यान्तर में बच्चे खाना खा लें और ग्यारह बजे से फिर पढ़ाई आरंभ हो जाए। भोजन माता सवा नौ तक आग ही जला रही थी जब कि वह आठ बजे स्कूल में पहुँच गई थी। उसकी इस इस लेटलतीफी पर मुझे गुस्सा आया और मैंने उसे समय पर आने और समय पर भोजन तैयार करने के लिए कहा तो वह रोज की तरह मुँह चलाने लगी बजाय अपनी गलती स्वीकार कर देर से आने की आदत में सुधार करने के। उसके उल्टे जवाब से मैं गुस्सा हो गया और मैंने उसे डाँटकर कहा कि अगर उसने 10 बजे तक खाना नहीं पकाया तो पका हुआ चावल या दाल वह अपने घर ले जाए।

उसने ग्यारह बजे तक केवल भात पकाया और जब मध्यान्तर में दाल माँगने लगी तो मैंने नहीं दी और पका हुआ भात अभिभावकों दिखाने को रख दिया।

दरअसल मैं उसकी ढीठ आदतों से तंग आ गया हूँ। सारे बच्चे और अभिभावक उससे परेशान हैं कोई दूसरी भोजन माता यहाँ खाना बनाने को तैयार नहीं होती। कारण वह बहुत बुरी-बुरी गालियाँ देती हैं। इस चयनित माता के कोई बच्चे नहीं हैं। बच्चों के साथ भी वह भेदभाव करती है। रोज विलंब से आती है। ईधन बर्बाद करती है। समझाने पर भद्दे और उल्टे जवाब देती है। खाना कभी समय पर नहीं बनाती। बच्चों तक को गालियाँ देती है अगर वे उसका कहना नहीं मानते या पानी के लिए नहीं जाते। क्लास में घुस जाती है और अनावश्यक बड़बड़ करती रहती है।

छुट्टी के बाद मैंने बच्चों को दो-दो सेव बाँटे और कहा कि कल सभी अपने अभिभावकों को स्कूल में बुलाएँ। ताकि वे इस भोजन माता को समझाएँ। छुट्टी के बाद जब मैंने उससे रसोई की चाभी माँगी तो उसने छुपा दी और मेरे साथ फिर गाली गलौज करने लगी।

यह तीसरा या चौथा अवसर है जब मैं भोजन माता को समझाने के लिए अभिभावकों बुला चुका हूँ। ऐसी स्थिति में तनाव से गुजरना पड़ता है। कई बार विचार आया कि इसे हटाने की कार्यवाही करूँ। पर फिर दया आती है। मैं नहीं चाहता कि मेरे हाथ से इसका बुरा हो। उसे समझा कर सही रास्ते पर लाना चाहता हूँ। और चाहता हूँ कि वह अपनी आदतों में सुधार करे।

इससे पहले वह मेरी अनुपस्थिति में स्कूल से चावल, दाल और दूसरी सामग्री चोरी कर ले जा चुकी है जिसके लिए उसने प्रधान और शिक्षा

समिति के सामने ऐसा फिर न करने का माफी पत्र भी दिया है। पर वह फिर फिर अपनी आदतों पर लौट आती है।

आज का पूरा दिन उसी की बड़-बड़ सुनते बीता। मध्यांतर के बाद पढ़ाने में मन नहीं लगा। वह महाढोंगी है रोती-रोती घर चली गई। अवकाश के बाद घर जा रहा था तो रास्ते में उसके देवर ने फिर विवाद करने की कोशिश की। उसे मैंने स्कूल में आने को कहा।

मध्यांतर से पूर्व कक्षा चार और पाँचवीं में विलोम शब्द लिखवाए। विलोम की अवधारणा समझाई और कम प्रयुक्त शब्दों के विलोमार्थी याद करवाए।

कक्षा 3 में संख्या पहचाने का अभ्यास कराया। 20 में से केवल 5 बच्चे 100 तक की संख्याओं को पहचान पा रहे हैं। शायद मेरा तरीका गलत हो या बच्चे डरे हुए हों या उनका संकोच हो या उनकी कम समझने की क्षमता हो मैं बहुत प्रयास के बाद भी दो अंकों की संख्याओं की पहचान नहीं करवा पाया। कल उन्हें दो समूह में बाँट कर अलग-अलग उनके बीच काम करूँगा।

मैं भी स्वयं पारंपरिक तरीकों से बाहर नहीं निकल पा रहा हूँ। बहुत जल्दी धैर्य खो रहा हूँ और कई बार उत्तेजित होकर बच्चों पर हाथ उठा दे रहा हूँ। बाद में पश्चाताप भी होता है। फिर ऐसी हरकत न दोहराने का संकल्प भी लेता हूँ पर हार जाता हूँ। 63 बच्चों के बीच एक साथ काम करना भी मानसिक थकान पैदा कर देता है। जो प्रेमपूर्वक संप्रेषण की क्षमता को कम कर देता है। हालाँकि बिमला और बिंदुलेश भी मदद कर रही हैं पर उन पर भी नजर रखनी पड़ती है और फिर वे तो मुझ से भी घोर पारंपरिक हैं।

इन दोनों से कक्षा एक और दो के बच्चों को अक्षर पहचान और सीधे पढ़ने की गतिविधियाँ करा रहा हूँ। वे दोनों इस बात से सहमत ही नहीं हो पा रही हैं कि बिना अक्षर मात्रा बारहखड़ी सीखे भी बच्चे पढ़ना सीख सकते हैं। वे मेरी बात पर हँसती हैं पर आखिर वही गतिविधि करवा देती हैं जो मैं कहता हूँ। एक अगस्त से वे दोनों मुझे सहयोग कर रही हैं पर आज पाँचवें दिन तक बच्चों में अपेक्षित प्रोग्रेस नहीं है।

इस साल मैं अपने विद्यालय को लर्निंग गारंटी स्कूल की श्रेणी में लाकर रहूँगा। मेरा यह संकल्प मुझे बराबर ऊर्जा दे रहा है और लाख निराशा के बाद भी मैं हिम्मत से अगले दिन की गतिविधि सोचने पर लग जाता हूँ।

कल सभी कक्षाओं के बच्चों को समूह में बाँटकर उनके साथ काम करेंगे। परंतु कल के दिन का भी एक बड़ा हिस्सा भोजन माता की धूर्तता की की भेंट चढ़ जाएगा।

7 अगस्त, 2007

आज सात तीस पर विद्यालय पहुँचा। दो-चार बच्चे स्कूल पहुँचे थे। आजकल बच्चे आज कल बच्चे पाँच-छः किलोमीटर की दूरी से विद्यालय आ रहे हैं। बच्चे अपनी छानियों से आते हैं जो विद्यालय से पाँच कि.मी. से अधिक की दूरी पर हैं। इसलिए देर से आने के लिए

न तो बच्चों को टोकते हैं और न डाँटते हैं। इतनी दूर से अगर वे विद्यालय आते भी हैं तो यह उनकी एक तरह से बहादुरी ही है। कक्षा एक, दो के बच्चे भी रोज 10 कि.मी. से अधिक चलते हैं। बच्चों की अद्भुत क्षमता को देखकर ताज्जुब होता है।

तो आज भी पूरे बच्चे रोज की तरह प्रार्थना समाप्त होते-होते 8:30 तक स्कूल पहुँचे। आज विद्यालय में भोजन माता के प्रकरण में अभिभावकों को भी बुलाया था। लोग नौ बजे के बाद ही आए और कुल 8-9 लोग ही आए।

8 अगस्त, 2007

आज ठीक सवा सात बजे स्कूल पहुँचा। आज सुना कि क्षेत्र में बी.ई.ओ. और डिप्टी बी.ई.ओ. आए हुए हैं तो उनका भी इंतजार रहा। वैसे आजकल 8:30 से पढ़ाई शुरू होती है। आज अधिकारियों के आने की सूचना के चलते आठ बजे तक प्रार्थना करवा ली थी। हालाँकि प्रार्थना में पूरे बच्चे नहीं आए थे परंतु कक्षा में बैठते-बैठते सभी बच्चे आ गए थे। आज की उपस्थिति 45/63 थी परंतु बिना नामांकन और विद्याकेंद्र के बच्चों सहित कुल उपस्थिति 58 थी।

आज कक्षा चौथी और पाँचवीं के बच्चों को हिंदी में दो समूहों में बाँटा। पहले समूह में वे बच्चे जो ठीक से पढ़ पा रहे हैं या शब्द तो पढ़ लेते हैं परंतु वाक्य पढ़ने में कठिनाई महसूस करते हैं या अटक-अटक कर पढ़ रहे हैं। दूसरे समूह में वे बच्चे जो केवल वर्ण पहचानते हैं या केवल छोटे-छोटे शब्द पढ़ पा रहे हैं। दोनों कक्षा के 20 बच्चों में से 10 बच्चे ग्रुप 1 में और 10 बच्चे दूसरे ग्रुप के योग्य निकले।

पहले ग्रुप को आज कक्षा चार की हिंदी की पाठ्यपुस्तक से दूसरे पाठ का अनुकरण वाचन कराया और पहले चार अनुच्छेद के कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर बच्चों से लिखवाया।

दूसरे समूह को टी.एल.एम. के रूप में तैयार एक सौ तीस शब्दों की सूची का मौन वाचन कराया। कक्षा चार और पाँचवीं में आज हिंदी में पहले पीरियड में इतना ही कार्य हो पाया।

दूसरे पीरियड में कक्षा तीन के बच्चों को गणित में दो समूहों में बाँटा। पहला जिन्हें 100 तक की गिनती पहचाननी आती है और दूसरे समूह में वे जिन्हें बिल्कुल भी गिनती पहचाननी नहीं आती है या 50 से कम तक पहचाननी आती है।

इस कक्षा में पहले समूह को बिना हासिल के जोड़ का अभ्यास कराया और दूसरे समूह को गिनती पहचानने का अभ्यास कराया।

संख्या पहचानने में अभी बच्चों के साथ खासी मशक्कत करनी पड़ रही है। इकाई और दहाई की पहचान कराने के बाद भी बच्चे अभी 100 तक की संख्याओं को नहीं पहचान पा रहे हैं। पहले समूह के बच्चे जोड़ की अवधारणा समझ रहे हैं। वे या तो संख्याओं को स्थानीय मान के अनुसार लिखने में गलती करते हैं या चिह्न को बनाने में।

कक्षा तीन के बच्चों के साथ संख्या पहचान की गतिविधियाँ यद्यपि कक्षा के स्तर से बहुत पीछे के क्रियाकलाप हैं परंतु बुनियादी अवधारणों

को स्पष्ट कराने से पहले आगे बढ़ना ठीक नहीं होगा।

आज बच्चों से पूरी तरह से जुड़ने के बाद मैं महसूस कर रहा हूँ कि मैंने लोकेष्णा के लालच में बच्चों से दूर रहकर उनका कितना बड़ा नुकसान किया है।

अभी तक मैं कक्षा 3, 4, और 5 के बच्चों के साथ हिंदी और गणित में काम कर पा रहा हूँ। कक्षा एक और दो के बच्चों के बीच मैं अभी बैठा ही नहीं हूँ। उन्हें बिंदुलेश और केदारी पारंपरिक तरीके से पढ़ा रही हैं और वे भी उनके साथ एक तरह से जुड़ रही हैं। मल्टीग्रेड टीचिंग से मैं अभी तक सहमत नहीं हो पा रहा हूँ। शौकिया तौर पर या एक-दो दिन के लिए वह किसी सीमा तक प्रासंगिक हो सकती है पर अगर एक कक्षा में अनेक कक्षाएँ हो तो मल्टीग्रेड टीचिंग सरासर बेमानी चीज है।

आज कक्षा चार-पाँच में पहले गुप को कक्षा चौथी की हिंदी के दूसरे पाठ का अनुकरण वाचन कराने में पूरा आधा घंटा बीत गया। ऐसे में और कक्षाओं को भी देखना यदि संभव भी हो तो उनके साथ ऐसा कुछ करना कि वे कक्षा स्तर से सीखते भी जाएँ, मैं एक कठिन और थकाऊ क्रियाकलाप मानता हूँ।

आज मध्यांतर के बाद बच्चों की फरमाइश पर स्वतंत्रता दिवस की तैयारी कराई। सारे बच्चों को बरामदे में एक साथ बिठाया और उन्होंने अपनी-अपनी इच्छा से गीत कविता और लोकगीत सुनाए। कुछ लड़कियों ने नृत्य किया।

ठीक एक बजे छुट्टी की।

10 अगस्त, 2007

आज न्याय पंचायत कार्यालय में मासिक बैठक थी। मैं पहले 7:15 पर विद्यालय पहुँचा। विद्यालय में चार-पाँच बच्चे पहुँचे थे। मैंने कार्यालय खोला, चाभी बच्चों को दी और बच्चों ने फुर्ती से कमरे साफ किए। मैंने बच्चों को पंक्ति में खड़े होने और प्रार्थना करने को कहा। बच्चों ने प्रार्थना की, मैं भी प्रार्थना स्थल पर बच्चों के साथ खड़ा रहा। प्रार्थना होते-होते 35 से अधिक बच्चे स्कूल पहुँच गए थे। आजकल सवेरे का स्कूल है और अधिकांश बच्चे दो से पाँच किलोमीटर तक पैदल चलकर स्कूल आते हैं। अक्सर बच्चे आठ बजे तक पहुँच पाते हैं। मैं उनकी स्थानीय परिस्थितियों से परिचित हूँ इसलिए देर से आने के लिए उन्हें डाँटता नहीं हूँ।

प्रार्थना के बाद बच्चों को कमरे में न बिठाकर मैंने उनकी छुट्टी कर दी क्योंकि मुझे मीटिंग में जाना है। सड़क पर आते-आते रास्ते में भोजन माता मिल गई। उसे, आज बच्चों की छुट्टी कर दी है, यह बताकर और भोजन न बनाने और कल के लिए पानी भर कर रख देने का निर्देश देकर मैं मीटिंग में चला गया।

पौने नौ बजे के लगभग मैं एन.पी.आर.सी. पहुँचा। वहाँ केवल एन.पी.आर.सी. समन्वयक उपस्थित थे। आज मुझे टेलीफोन का बिल और

एल.आई.सी. की किश्तें जमा कराने उत्तरकाशी जाना था इसलिए मैंने विद्यालय की सूचनाएँ समन्वयक के पास जमा कराईं और उत्तरकाशी चला गया। वास्तव में आज के दिन का उपयोग अपने निजी काम पूरे करने के लिए करना चाहता था। मीटिंग में आना भी आवश्यक है और वहाँ कुछ सार्थक होता हो ऐसा तो बिल्कुल भी नहीं है। समन्वयक लोग पूरी तरह से डाकियों की भूमिका में आ गए हैं। इस बैठक में समन्वयक कुछ सूचनाएँ देता है और कुछ लेता है बस। कुछ ऐसी बहसें होती हैं जिनका कोई सिर-पैर नहीं होता। अपनी कुशलक्षेम होती है। स्थानांतरण और पे-स्केल पर बात होती है और घंटा-दो घंटा बर्बाद करने के बाद लोग घर चले जाते हैं। स्कूल से छुट्टी पाने का यह निर्बाध दिवस होता है।

कभी-कभी तो ऐसा होता है कि समन्वयक किसी के पास संदेश भिजवा देता है कि मीटिंग 10 तारीख के बजाय 12 या 14 तारीख को होगी। पर लोग पहले दिन भी आते हैं और दूसरे दिन भी। और कभी-कभी समन्वयक महोदय नहीं आते हैं तो फिर नहीं आते। उनसे कोई नहीं पूछता कि उन्होंने क्यों अध्यापकों के दो-दो दिन बर्बाद किए। अधिकांश अध्यापक अपनी सूचनाएँ वहीं पर तैयार करते हैं। अगर किसी सूचना के आवश्यक आँकड़े कोई स्कूल से नहीं लाया तो उसे वहीं भिड़ा लिया जाता है। हमारे समन्वयक महोदय इस काम में खासे माहिर हैं। वे कोहॉर्ट, एम.डी.एम. और कोटिकरण तक की रिपोर्ट स्वयं बना लेते हैं। बस उन्हें संबंधित विषय के फॉर्मेट पर प्रधानाध्यापक के हस्ताक्षर और मुहर चाहिए होती है। अभी पिछले सत्र में कोटिकरण को लेकर उन्होंने मुझे कहा था कि, 'आप अपने स्कूल के बच्चों की परीक्षा लेकर अंक सूची मुझे दे देना और अपने स्कूल को सी ग्रेड में दिखा देना।'

तो ऐसी मीटिंग का लाभ उठाकर मैंने आज जिला मुख्यालय के कार्य निबटाए। फोन का बिल जमा किया, जीवन बीमा की किश्तें जमा करवाई, दो टीसियों पर काउंटर साइन करवाने थे पर आज अपर जिला शिक्षा अधिकारी माननीय शिक्षा मंत्री की अगवानी में गए थे। इसलिए टी.सी. उन्हीं के कार्यालय में छोड़नी पड़ी।

उत्तरकाशी पहुँचते ही पहले सौरभ राय जी और फिर अनंत सर का फोन आया। सौरभ जी ने 15 से 17 अगस्त तक देहरादून में आयोजित फीडबैक कार्यशाला में अन ऑफिशियली प्रतिभाग करने का आमंत्रण दिया और अनंत सर ने संक्षेप में कार्यशाला का उद्देश्य बताया। उन्होंने कुछ और शिक्षकों के नाम सुझाने को कहा तो मुझे केवल यमुना अवस्थी का नाम ध्यान आया। यमुना प्रसाद जी को मैंने भी फोन किया और उन्हें इस कार्यशाला में प्रतिभाग करने का निमंत्रण दिया।

वापसी में युगवाणी पत्रिका खरीदी और उसमें खास रस्किन बॉण्ड का संस्मरण, नई पाठ्यपुस्तकों पर सीताराम बहुगुणा का आलेख, आजादी की लड़ाई में पहाड़ी महिलाओं की भूमिका पर जी.सी. जोशी का आलेख और पंकज बिष्ट की कहानी 'घर' पढ़ी। युगवाणी अच्छी सामग्री छाप रही है।

धौंतरी वापस आते ही एस.सी.ई.आर.टी. से पाठ्यपुस्तक लेखन कार्यशाला में प्रतिभाग करने के मानदेय स्वरूप दो हजार चार सौ पिचहत्तर रुपए का ड्राफ्ट मिला। रात 8:30 अपर निदेशक जी को इस के प्रति आभार पत्र टाइप किया जिसे कल प्रिंटआउट करूँगा। 9:00 रात्रि

से 10:30 रात्रि तक यह डायरी लिखी और साथ में गुलाम अली की गज़लें भी सुनता रहा।

अभी आधा पौन घंटा कादंबिनी का अगस्त अंक पढ़ूँगा और फिर सोऊँगा।

11 अगस्त, 2007

आज प्रातः ठीक सवा सात बजे विद्यालय में पहुँचा। केवल दो बच्चे आए हुए थे। बच्चों ने कमरे खोले और सफाई की। साढ़े सात बजे तक बिंदु भी आ गई। बिमला आठ बजे पहुँची। साढ़े सात बजे बच्चे प्रार्थना के लिए खड़े किए। प्रार्थना में 30 के लगभग बच्चे थे परंतु आठ बजे तक 45 बच्चे उपस्थित हो गए थे। आजकल परिवार दूर डॉड़ों में रहने के कारण उपस्थिति घट गई है। बच्चों को 5 कि.मी. तक पैदल चलकर आना पड़ता है। एक कि.मी. से कम चलकर कोई बच्चा नहीं आता। वैसे भी हमारा स्कूल मूल बस्ती से डेढ़ कि.मी. से अधिक फासले पर है। बड़ी कक्षाओं के बच्चों पर उपस्थिति के लिए तो सामान्य दिनों में जोर डालता हूँ पर आजकल अगर कोई बच्चा नौ बजे भी स्कूल पहुँचता है तो हम उसे कुछ नहीं कहते अर्थात् डाँटते नहीं हैं। कक्षा एक और दो में उपस्थिति बहुत ही कम हो गई है। नहीं रामा, शिव, गणेश और कक्षा 3 की विकलांग ममता को पाँच कि.मी. की दूरी तय करके आना पड़ता है। इतनी दूर वाले बच्चे आजकल आ ही नहीं रहे हैं। आज साढ़े सात से 8:20 तक प्रार्थना का सत्र चला। प्रार्थना के बाद प्रतिज्ञा के शुद्ध उच्चारण का अभ्यास कराया और दो समूह गीत 'इतनी शक्ति हमें देना दाता; सारे जहाँ से अच्छा हिंदोस्ता हमारा; और प्रयाण गीत वीर तुम बढ़े चलो' बच्चों को गाकर सुनाए और गाने का अभ्यास करवाया।

बरसात का मौसम, रास्ते में जोंकों की भरमार और ऊबड़-खाबड़ रास्ता तय करने के बाद कक्षा तीन, चार और पाँचवीं के बच्चों की उपस्थिति सामान्य है। कक्षा तीन में औसत बीस में से चार बच्चे और चार-पाँच में औसत एक बच्चा ही अनुपस्थित रहता है। परंतु भादों शुरू होते ही अर्थात् 15 के बाद बड़ी कक्षाओं की उपस्थिति दर फिर घट जाएगी। क्योंकि धूप की तीव्रता बढ़ने के साथ ही भाँग लगाने का काम शुरू हो जाएगा और बच्चे माँ-बाप की मदद के लिए इस काम में लग जाएँगे। बच्चों की इस सहभागिता का असर स्कूल पर भी पड़ेगा और हमें फिर उपस्थिति की समस्या से जूझना पड़ेगा।

भोजन माता साढ़े आठ बजे स्कूल में पहुँची। आज खिचड़ी पकाई गई। ठीक 10 बजे उसने भोजन तैयार कर लिया था। 10:30 तक बच्चों ने खाना खाया और थालियाँ धोईं। ग्यारह बजे तक हम तीनों साथियों ने बच्चों के साथ कैरम खेला। 11 बजे मध्यांतर पूरा हुआ। 11 से एक बजे तक पंद्रह अगस्त की तैयारी कराई। सभी बच्चों को बरामदे में बिटाकर बच्चों से गीत कविता, चुटकुले सुने।

मैंने साढ़े आठ बजे से सवा नौ बजे तक कक्षा चार और पाँच के बच्चों के पहले समूह को कक्षा चार की हिंदी के दूसरे पाठ का अनुकरण वाचन कराया। कठिन शब्दों को समझाया और पाठ पर बातचीत की।

यह समूह बात को तो समझता है परंतु उत्तर देते समय बच्चे या तो अधूरे वाक्य बोलते हैं या एक ही शब्द में उत्तर देते हैं। यहाँ पर मुझे

लगता है काश बच्चे को अपनी मातृभाषा में जवाब देने की आजादी होती। हालाँकि मैंने ऐसे प्रयोग नहीं किए कि हिंदी के पाठों पर गढ़वाली में चर्चा कराई जाए और उनसे उनकी भाषा में ही सवाल जवाब किए जाएँ। बच्चे हिंदी बोलना सीखें और उनका हिंदी का वाक्य विन्यास पुष्ट होता चला जाए इसीलिए मैं कक्षा में मातृभाषा के प्रयोग से बचना चाहता हूँ। आखिर परीक्षा में तो उन्हें हिंदी में ही जवाब देने होंगे।

अगस्त माह में मैं सभी कक्षाओं में केवल पढ़ने के कौशल पर ही ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ।

इन्हीं कक्षाओं के दूसरे समूह को टाइप की हुई "दो बकरियाँ" शीर्षक कहानी दी और उन्हें मौन वाचन करने को कहा। इस समूह के साथ मैं अभी तक वार्तालाप नहीं कर सका। परंतु पढ़ने के लिए मेरे द्वारा निर्मित सामग्री का उन पर असर हो रहा है। इसे मैं दूर से ही महसूस कर रहा हूँ। यदि उपस्थिति ठीक रही तो मैं इस समूह को अक्टूबर प्रथम सप्ताह तक दूसरे समूह के बराबर ले आऊँगा और पहला समूह भाषा में काफी आगे बढ़ चुका होगा। इसी समूह में अनुपस्थित रहने वाली लड़कियाँ ज्यादा हैं। इनमें चित्रा, गीता, शिवहरि, संगीता, धृपाल और सुमन प्रमुख हैं।

इन्हीं समूहों में आज गणित में जोड़ करवाया। पहले समूह को पाँच पंक्तियों तक का हासिल वाला जोड़ और दूसरे समूह को बिना हासिल वाला जोड़ करवाया। पहले समूह को 100 तक की गिनती भी पहचाननी नहीं आ रही है। अभी मेरे सामने यही चुनौती है कि उन्हें संख्या पहचान कैसे करवाई जाए। फिर स्थानीय मान की समझ और बाद में जोड़ घटाव पर आना होगा। पहला समूह अप्रैल माह में ही स्थानीय मान की समझ प्राप्त कर चुका है।

कक्षा तीन में भी गणित में पहले समूह को हासिल वाला जोड़ करवाया। उँगलियों पर गिनती करने की विधि आज फिर दोहराई। यह समूह शीघ्र ही बड़ी संख्याओं के साथ जोड़ की संक्रिया सीख जाएगा। पर दूसरे समूह के साथ फिर वही समस्या है कि उन्हें 100 तक संख्याओं की पहचान करना बाकी है। इनके साथ संख्या पहचानने में मुझे खास मशक्कत करनी पड़ेगी। अभी तक के प्रयास तो सफल प्रतीत नहीं हो रहे हैं।

कक्षा एक और दो को मैं अभी स्वयं नहीं देख पा रहा हूँ। बिमला और बिंदुलेश पारंपरिक तरीके से जैसे भी पढ़ा रहीं हैं पर उनके साथ लगातार मेहनत कर रही हैं। इन दोनों लड़कियों की विशेषता यह है कि ये दोनों बच्चों को डाँटती अथवा पीटती नहीं हैं। मैं बाल-मित्र-अध्यापक का भ्रम पालने के बाद भी बच्चों पर कई बार संयम खो दे देता हूँ। उन पर बिफर पड़ता हूँ और कई बार हाथ छोड़ बैठता हूँ।

कुछ लोग

कुछ लोग छोड़ नहीं पाते
अपने अहंकार
और बदले में छोड़ देते हैं
ढेर सारा प्यार

कुछ लोग छोड़ नहीं पाते
टहनियों को
और बदले में छोड़ देते हैं
एक लम्बी उड़ान

कुछ लोग नहीं छोड़ पाते
कुंठा और दुविधाओं को
और बदले में छोड़ देते हैं
विश्वास भरा जीवन

कुछ लोग नहीं छोड़ पाते
अपनी शंकाओं को
और बदले में छोड़ देते हैं
निश्चिंत चैन भरा जीवन।

आज दूसरा रविवार है जब बच्चों को स्कूल बुलाया। मैं ठीक साढ़े नौ बजे स्कूल पहुँचा। हालाँकि बच्चों को मैंने नौ बजे बुलाया था। और वे समय पर उपस्थित हो गए थे। आज बड़ी जोर से बारिश हो रही थी फिर भी कक्षा 3, 4, और 5 के कुल 20 बच्चे स्कूल आए। वे बच्चे नहीं आ पाए जो भैंसों के साथ डाँडू (छानियों) में गए हैं।

मैंने केदारी को कहा था कि मेरे आने तक वह बच्चों के देखे पर वह नहीं आ पाई शायद उसे बुखार था। केदारी सरकार की आशा योजना के अंतर्गत ग्राम सभा भड़कोट में स्वास्थ्य कार्यकर्ता है। उसने 28 जुलाई को मुझसे आग्रह किया था कि वह विद्यालय को अपनी निःशुल्क सेवाएँ देना चाहती है। उसका कहना है कि स्कूल में रहकर जहाँ बच्चों के बीच उसका समय सार्थक होगा वहीं वह हिंदी और गणित विषय में अपनी आधारभूत कमजोरियों को भी सुधार सकेगी। और सचमुच इन 10-12 दिनों में मैंने देखा है कि वह कई स्थानों पर मात्राओं की गलती करती है। इसी तरह वह गणित में छोटे-छोटे जमा-घटाव के सवालों में भी त्रुटियाँ करती है पर बराबर पूछती भी जाती है। मैंने उसे ग्राम प्रधान और शिक्षा समिति के सदस्यों और कुछ अभिभावकों से परामर्श कर स्कूल में पढ़ाने की अनुमति दे दी है। वह एक अगस्त से नियमित रूप से स्कूल में आ रही है। अभी मैंने उसे केवल कक्षा एक और दो में मौखिक अभ्यास कार्य करवाने की अनुमति दी है।

केदारी लगनशील लड़की है पर स्थानीय परिस्थितियों ने उसे 19 साल की उम्र में ही एक गृहणी बना दिया है। वैसे वह कक्षा दसवीं पास है परंतु शैक्षिक ज्ञान उसे आठवीं के स्तर का भी नहीं है। पर उसकी इच्छा है कि वह स्कूल में रह कर अपने ज्ञान में सुधार और बढ़ोतरी करेगी। केदारी के पति चंडीगढ़ के किसी होटल में नौकरी करते हैं। आशा योजना से उसे मानदेय के रूप में बहुत कम राशि मिलती है। अभी तक तो शायद मिली भी नहीं है।

मैंने रोज की तरह कक्षा 4 और 5 के बच्चों को एक साथ बिठाया और तीसरी के बच्चों को एक साथ बिठाया। कक्षा 3-4 के बच्चों का पहले समूह पढ़ने में प्रवीण होने लगा है और गणित में हजार तक की संख्याओं को पढ़ने के साथ ही स्थानीय मान की समझ भी बनाने लगा है। मैंने इस समूह से बड़ी-बड़ी संख्याओं का जोड़ कराया और जोड़ विधि से पहाड़े बनवाए। मैं ऐसा करके उनकी जोड़ की अवधारणा पुष्ट कर लेना चाहता हूँ। उसके बाद ही घटाने की समझ दूँगा। दूसरे समूह को जो अभी तक 100 तक की संख्या भी नहीं पहचान पा रहा है, से बिना हासिल के जोड़ करवाए। उम्मीद है कि जल्दी ही इनमें से अधिकांश बच्चे हासिल वाले जोड़ हल करने की तरफ बढ़ जाएँगे।

कक्षा तीन के दोनों समूहों से भी इसी तरह जोड़ का ही अभ्यास कराया। और ठीक 12 बजे बच्चों की छुट्टी कर दी।

कई लोगों को मेरे रविवार को भी स्कूल लगाने पर आपत्ति है। मुझे कई बार ताज्जुब होता है कि लोग कितने संकीर्ण होते जा रहे हैं। पर विरोध और वह भी निष्प्रभावी वे ही लोग करते हैं जिनके बच्चे हमारे स्कूल में नहीं हैं। कई लोगों की टिप्पणी है कि इस मास्टर का घर

में तो कोई काम है नहीं इसलिए टाइम काटने के लिए स्कूल में आ जाता है। ये समाचार भी मेरे पास बच्चे ही लाते हैं। मेरे सामने ऐसा कहने की किसी की हिम्मत नहीं हुई।

मैं महसूस करता हूँ कि बच्चे रविवार को अन्य दिनों की अपेक्षा अधिक खुलेपन के साथ पेश आते हैं किसी तरह का तनाव या दबाव महसूस नहीं करते और मेरे साथ भी अधिक दोस्ताना अंदाज से रहते हैं।

कल से एन.पी.आर.सी. बड़ेथ में नौ दिवसीय प्रशिक्षण है। मुझे इस प्रशिक्षण में मास्टर ट्रेनर के रूप में प्रतिभाग करना है। बहुत अरुचि के साथ मुझे इस प्रशिक्षण में जाना पड़ेगा। विभागीय आदेशों की पालन बाध्यता न होती तो मैं इस प्रशिक्षण में कतई शामिल न होता। एक अगस्त से पूरी तरह से बच्चों के साथ रहने के कारण उनके साथ इतना गहरा जुड़ाव हो गया है कि उन्हें एक पल के लिए भी छोड़ने की इच्छा नहीं होती।

तो कल बिमला, बिंदुलेश और केदारी के पास बच्चे छोड़कर 21 अगस्त तक इस प्रशिक्षण में रहूँगा।

13-14 अगस्त, 2007

13 अगस्त सोमवार को ठीक सात बजे विद्यालय पहुँचा। आज मुझे एन.पी.आर.सी.बड़ेथ में नौ दिवसीय प्रशिक्षण में जाना है और एम. टी. के रूप में प्रतिभाग करना है।

हल्की-हल्की बारिश हो रही थी। मैं नौ बजे तक विद्यालय में रहा। सवा आठ तक प्रार्थना हुई और उसके बाद बच्चे कक्षाओं में बैठे। मैंने बिमला को विद्यालय का चार्ज समझाया। उसके लिए स्कूल में पढ़ाने का आदेश बनाया, उसे भोजन की व्यवस्था और अन्य बातें समझा कर नौ बजे सी.आर.सी. बड़ेथ के लिए चल दिया। आज स्कूल में बिंदुलेश और बिमला थी। केदारी अस्वस्थ थी और मेरे ही साथ हास्पिटल जाने के लिए धौन्तरी आ गई थी।

10 बजे स्कूटर से सी.आर.सी. रायमेर पहुँचा। कुल 28 अध्यापकों के लिए इस प्रशिक्षण के आदेश निर्गत किए गए थे। परंतु आज प्रशिक्षण में केवल आठ लोग ही उपस्थित हुए। एक शिक्षक ने तो केवल रजिस्टर में साइन किए और चला गया। बाकी लोग उसकी हरकत पर मुस्कराते रहे।

आज का सत्र परिचय में ही बीता। प्रतिभागियों को इस नौ दिवसीय प्रशिक्षण का परिचय दिया। जिसमें पहले तीन दिन अभिप्रेरण दूसरे तीन दिन प्रथम संस्था का नींव कार्यक्रम और आखिरी तीन दिन मूल्यांकन, मापन, परीक्षण, कोटिकरण और ब्लूप्रिंट आदि पर मॉड्यूल प्रस्तुत किए जाने हैं।

पूरा कक्ष खाली होने के कारण कुछ विशेष बताने का उत्साह नहीं जगा। प्रतिभागियों के साथ अनौपचारिक बातचीत होती रही।

अनौचारिक बातचीत में सभी शिक्षक स्वीकार करते हैं कि प्रशिक्षण अब निरर्थक होते जा रहे हैं। अध्यापकों की प्रशिक्षणों से अरुचि होती जा रही है। इसके एक साथ कई कारण हैं। एक तो प्रशिक्षण केन्द्रों पर अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। यह स्थिति डायट से लेकर सी.आर.सी. तक है। डी.पी.ई.पी. और सर्वशिक्षा के आरंभिक दिनों में बी.आर.सी. में जो प्रशिक्षण चले उनमें बहुत ही अच्छा उत्साह का माहौल रहता था। प्रतिभागी 32 के समूह में आते थे। समय पर आते थे, रुचिपूर्वक भाग लेते थे। सार्थक बहस होती थी। प्रतिभागी पूरे समय प्रशिक्षण कक्ष में रहते थे। प्रशिक्षण कक्ष के बाहर भी चर्चा का वातावरण रहता था। कक्ष छोड़ते वक्त प्रतिभागियों के चेहरे पर एक अनोखी चमक देखी जा सकती थी। यहाँ तक कि बस में भी प्रशिक्षण के मुद्दों पर चर्चा होती थी। प्रशिक्षणदाताओं का प्रस्तुतिकरण और उनकी क्षमता पर भी बातचीत होती थी। पर तीसरे वर्ष के बाद धीरे-धीरे प्रशिक्षणों की गुणवत्ता गिरती गई और आज यह स्थिति हो गई है कि कोई प्रशिक्षण कक्ष में जाना ही नहीं चाहता।

मैंने 2001 में जब पहली बार बी.आर.सी. स्तर पर प्रशिक्षण दिया तो खूब अध्ययन किया। प्रतिभागी भी संबंधित विषय पर अच्छे सार्थक प्रश्न करते थे। यह सिलसिला 2004-05 के प्रशिक्षणों तक चला। इस अवधि में मैंने स्वाध्याय से अर्जित अपने ज्ञान और अनुभव को सभी के साथ बाँटने का भरसक प्रयत्न किया। इस दौरान एकलव्य से प्रकाशित स्रोत के अंक बहुत काम आए। विषय के प्रसंग में मैंने इन पत्रिकाओं के पुराने अंकों में छपे लेखों को अपने साथी शिक्षकों के साथ बाँटा।

लगन मेहनत और रुचि से प्रशिक्षण में भाग लेने से मुझे भी बहुत लाभ मिला। एक ओर जहाँ मेरा विषय को रोचक तरीके से प्रस्तुत करने का अनुभव बढ़ा वहीं मुझे प्रशंसा और सम्मान भी मिला जो मेरे लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। इसके साथ ही मैं अधिकारियों की दृष्टि में भी आया और मुझे राज्य स्तर पर काम करने का अवसर दिया जाने लगा। और धीरे-धीरे मैं ब्लॉक स्तर से उठ कर राज्य स्तर पर काम करने लगा। प्रशिक्षण समाप्ति पर दसवें दिन लगता था कि काश यह प्रशिक्षण कुछ और दिन चलता ? इन प्रशिक्षण सत्रों में केवल शैक्षिक मुद्दे शामिल नहीं थे। इन दस दिनों में लोग भावनात्मक रूप से भी नजदीक आते थे। अपनी समस्याएँ और उपलब्धियाँ दोनों शेयर करते थे। इसके साथ ही नए मित्र भी बनते थे। कुल मिलाकर प्रशिक्षण बहुत ही रोमांचक होता था। इस दौरान अधिकारी भी अक्सर दूसरे-तीसरे दिन अनुश्रवण के लिए आते थे और पूरे मनोयोग से प्रशिक्षण का हिस्सा बनते थे। वे अध्यापक जो कभी भी अधिकारियों से परिचित नहीं हो पाते यहाँ तक कि उन्हें कभी देख भी नहीं पाते इन प्रशिक्षणों के माध्यम से उनके निकट आते थे और एक तरह से अधिकारियों का भी अपनापन बनता था।

आज प्रशिक्षणों की स्थिति देखता हूँ तो रोना आता है। हमारे तंत्र पर वे थोड़े से लोग हावी हो गए हैं जो सदा से शिक्षा जगत पर बोझ की तरह ही रहे हैं। वे लोग पहले भी थे पर सब के सक्रिय रहने से उन्हें भी मजबूरन ही सही पर प्रशिक्षण कक्ष में बँधे रहना पड़ता था। अगर वे लोग कक्ष से नदारद रहते भी तो सभी उन्हें इग्नोर करते थे। आज वे जैसे आदर्श हो गए हैं। 'अमुक व्यक्ति क्यों नहीं है ? उनके साथ जब कुछ नहीं होता तो हम भी क्यों यहाँ पाँच घंटे बिताएँ' जैसी बातें प्रतिभागी कहने लगे हैं।

इस सारी व्यवस्था के लिए हमारा पूरा तंत्र जिम्मेदार है। उसमें सी.आर.सी. समन्वयक से लेकर बी.एस.ए./डायट प्राचार्य और शायद उनसे बड़े अधिकारी भी समान रूप से जिम्मेदार हैं।

प्रशिक्षणों के असफल होने का दूसरा बड़ा कारण है पैसे के मामले में भ्रष्ट हो गया हमारा पूरा सिस्टम। प्रशिक्षणों का उद्देश्य शैक्षिक गुणवत्ता संवर्द्धन न होकर पैसा कमाना हो गया है। सबकी दृष्टि प्रशिक्षणों के लिए आ रही मोटी रकम पर टिकी रहती है। पहले डायट और बी.आर.सी. में यह होड़ रहती थी कि प्रशिक्षण डायट में हों। उसमें प्रशिक्षणों की विकेंद्रीकरण नीति के कारण बी.आर.सी. की जीत हुई तो दो, तीन साल तो बैच ठीक संख्या अर्थात् 32 की संख्या में ही बुलाए जाते रहे पर बाद में 90-90 प्रशिक्षणों के बैच भी बी.आर.सी. में चले। ऐसे में प्रशिक्षणों की गुणवत्ता को समझा जा सकता है। इस भीड़ में उन लोगों ने खूब फायदा उठाया जो प्रशिक्षणों से नदारद रहना अपना मौलिक कर्तव्य समझते हैं और कक्ष में उपस्थित रहना अपनी तौहीन समझते हैं। इन भगोड़े साथियों को प्रोत्साहित करने में भी पैसे का ही हाथ रहा है। वह ऐसे कि वे बी.आर.सी. समन्वयक या सह-समन्वयक जो भी प्रशिक्षण के अंत में टी.ए., डी.ए. बाँटते हैं, से मिल जाते हैं और कहते हैं भाई मेरा टी.ए./डी.ए. तुम ही खा लेना और हो सके तो मेरे छूटे हुए दस्ताखत भी कर लेना। बस हो गया दोनों का काम। दसवें दिन बाकी प्रशिक्षणार्थियों के जाने के बाद इन महान विभूतियों के छूटे हुए हस्ताक्षर संबंधित सह-समन्वयक कर लेता है और हर प्रशिक्षण में अच्छी रकम बना लेता है। इस तरह से राशन भी बचता है और पैसा भी।

फिर बी.आर.सी. समन्वयक और अब सी.आर.सी. समन्वयक का यह रोना रहता है कि उन्हें शेयर ऊपर तक पहुँचाना पड़ता है। इसमें जिला समन्वयक, बी.एस.ए. अनुश्रवण कर्ता और डायट प्राचार्य तक सभी शामिल होते बताए जाते हैं।

15-19 अगस्त, 2007

आज साढ़े छः बजे स्कूल पहुँचा। बच्चे स्कूल आने लगे थे और सात बजे तक सभी बच्चे स्कूल आ गए थे। आज पूरे 63 बच्चे साफ सुथरे कपड़ों में यूनीफार्म पहन कर स्कूल आए थे। विद्याकेंद्र लोदू और डौरा के बच्चे और अपने भाई-बहिनों के साथ कुछ बिना नामांकित बच्चे भी उपस्थित थे। कुल 90 से अधिक बच्चे थे।

मैंने दोनों शिक्षा आचार्य बिमला और दर्शनी के साथ बच्चों को प्रभात फेरी के लिए भेजा और स्वयं झंडारोहण की तैयारी करने लगा। बच्चे पड़ोस से सबल मॉग लाए थे। मैंने गड्ढा बनाया और उसमें पाइप गाड़ कर घिरनी पर झंडा लगा दिया। पौने आठ बजे तक बच्चे भी प्रभात फेरी से लौट आए। कुछ अभिभावक भी मिष्टान लेकर स्कूल में आ गए थे। मैं स्वयं चार किलो मिष्टान ले आया था।

झंडारोहण के बाद सभी बच्चे अभिभावक और हम अध्यापक लोग जूनियर हाईस्कूल के प्रांगण में चले गए जो हमारे प्राथमिक विद्यालय से आधा किलोमीटर दूर है। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति वहीं होनी थी। प्रधान जी भी हमारे स्कूल में आ गए थे। वे भी हमारे साथ जूनियर हाईस्कूल में चले गए।

बच्चों की इच्छा थी कि हम अपने कार्यक्रम अपने ही स्कूल में करें। कुछ बच्चों ने विरोध भी जताया। एक तरह से उन्होंने जूनियर हाईस्कूल में चलने के लिए अनिच्छा जताई और मेरे जोर देने पर ही वे वहाँ चलने को राजी हुए। बच्चों की अनिच्छा के बावजूद मुझे उन्हें दूसरे स्कूल में ले जाना पड़ा।

स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में

1. 15 अगस्त को पहले स्कूल और फिर देहरादून गया। एल.जी.पी. की गतिविधि निर्माण अनौपचारिक कार्यशाला में।
2. 16 से 18 अगस्त कार्यशाला में।
3. 19 अगस्त वापसी।
4. 19 अगस्त को चिन्यालीसौड़ में पुरस्कृत किया जाना था पर समाचार मुझे नहीं मिल पाया।

20 अगस्त, 2007

मैं सोमवार को नौ बजे सेवारत प्रशिक्षण में गोरसाड़ा पहुँचा। रास्ते में था तो एन.पी.आर.सी. समन्वयक श्री राजेन्द्र प्रसाद जी का फोन आया कि बी.एस.ए. साहब आ रहे हैं। प्रशिक्षण स्थल में पहुँचते ही पता चला कि दो जिला समन्वयक और बी.आर.सी. समन्वयक के साथ अपर जिला शिक्षा अधिकारी गढ़वाली जूनियर हाईस्कूल में चले गए हैं।

प्रशिक्षण में आज तेरह में से केवल चार प्रतिभागी उपस्थित थे। अक्सर रोज ही यह स्थिति रहती है तो वहाँ कुछ भी बताने की इच्छा नहीं होती। आखिर चार छः प्रतिभागियों में कुछ भी कहने का माहौल नहीं बनता। प्रतिभागियों को मूल्यांकन के मॉड्यूल बाँटे और अच्छे प्रश्न कैसे हों और मूल्यांकन व मापन पर चर्चा कराई। एक बजे भोजनावकाश हुआ और उसके बाद छुट्टी हो गई।

प्रशिक्षण लगातार अरुचिकर होते जा रहे हैं। इस प्रशिक्षण में पच्चीस से अधिक प्रतिभागियों ने प्रतिभाग करना था। परंतु कुछ लोगों को जो जिला मुख्यालय से आना-जाना करते हैं उन्हें बी.आर.सी. मुख्यालय में ही प्रशिक्षण दे दिया गया तो एन.पी.आर.सी. में प्रतिभागियों की संख्या घट गई है। अनुशासन नाम की कोई चीज नहीं रह गई है। जिसकी जब मर्जी हो रही है आ रहा है जब मर्जी हो रही है जा रहा है। कोई पहले दिन आकर फिर आखिर के दिन दर्शन दे रहा है। जो लोग नियमित हैं भी उनमें फिर आक्रोश और उपेक्षा पैदा होना स्वाभाविक है। प्रशिक्षणों की गुणवत्ता को सही रास्ते पर लाना अब शायद संभव भी नहीं है।

दो बजे वापस कमरे पर धौतरी पहुँचा तो यहाँ दो लड़के इंतजार कर रहे थे। उन्हें अपनी पत्नियों के दस साल पुराने कक्षा पाँचवीं की अंकसूचियों की नकल चाहिए थी। ढाई बजे स्कूल के लिए चला तो रास्ते में बी.एस.ए. साहब मिले। उन्होंने मुझे रोका और कहा कि हम आपके स्कूल को देखकर आ रहे हैं। हालाँकि तब तक स्कूल का अवकाश हो चुका था। उन्होंने बाहर से ही स्कूल को देखा होगा।

28 ♣ एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने

बी.एस.ए. साहब व्यंग्य से बोले, “आपका स्कूल तो बहुत अच्छा है। आपकी फूलवारी देखकर मैं बहुत खुश हो गया। आपका काम भी देख लिया है। पुताई आपने बहुत अच्छी कर रखी है। रैंप रैलिंग बहुत अच्छी बनी है। और स्कूल की सफाई तो बहुत ही अच्छी है।” मैं जानता था कि यह सब व्यंग्य में बोला जा रहा है। मैं चुप ही रहा। आजकल बरसात के कारण चारों ओर झाड़ झंखाड़ उग आया है। स्कूल में चाइल्ड फ्रेंडली के अंतर्गत निर्माण कार्य चल रहा है तो चारों ओर रेत, रोड़ी, लकड़ी और सीमेंट आदि दूसरा सामान बिखरा हुआ है। सब कुछ अस्त-व्यस्त है। इसलिए परिवेश बहुत ही गंदा लग रहा है। मैं खुद इस माहौल से चिंतित हूँ। शायद एक आध महीने में सब ठीक हो जाएगा। पर बाहर से आने वाले आदमी के लिए क्या कहा जा सकता है। फिर ऊपर से अफसर। आपको सही सलाह देने की बजाय पचास तरह की नुक्ताचीनी आपके काम पर करेंगे।

बी.एस.ए. साहब की इस टिप्पणी से एक बार तो मैं तनाव में आ गया था। पर थोड़ी देर में संभल गया। आखिर हर आदमी की अपनी कमजोरियाँ हैं। अफसर शायद ही कभी अपनी कमजोरियों पर नजर डालते हों या यह सोचते हों कि उनके अधीनस्त कर्मचारी उनसे क्या-क्या अपेक्षा रखते हैं। मैं अपनी कमजोरियों को पूरी तरह से महसूस करता हूँ। पर उन्हें दूर करने के प्रति भी प्रतिबद्ध हूँ। मैं स्वयं को भगवान के प्रति उत्तरदायी मानता हूँ और जब भी अपनी कमजोरियों के कारण तनाव में आता हूँ भगवान को यथास्थिति बताता हूँ। मैं अपने स्कूल की कमजोर स्थिति से वाकिफ हूँ। इसे मजबूत बनाने के लिए कटिबद्ध हूँ। और उम्मीद करता हूँ कि शीघ्र ही उन्हें दूर कर सम्मान के साथ खड़ा हो सकूँगा। और इतना आत्मविश्वास जीत लूँगा कि अपने स्कूल में शिक्षा निदेशक को बुलाने का साहस कर सकूँगा।

फिर बी.एस.ए. साहब बोले कि क्या आपको पाठ्यपुस्तक की समीक्षा का पत्र मिल गया है? यद्यपि यह पत्र उनके कार्यालय से नहीं मिला था परंतु क्योंकि सीधे निदेशालय से मिल गया था इसलिए मैंने स्वीकृति दे दी। उन्होंने कहा कि समीक्षा में जाने से पहले मैं एक बार उनसे मिल लूँ। मैंने उनसे आग्रह किया कि निदेशालय से मुझे कहा गया है कि हम पुस्तक समीक्षा के लिए अपनी टीम बढ़ा लें। उन्होंने इसकी स्वीकृति नहीं दी। और चले गए। यह सारी बात सड़क पर खड़े-खड़े ही हुई। वे बस में बैठे थे और मैं उनकी खिड़की के पास खड़ा रहा।

मैं स्कूल में गया और दोनों लड़कों को उनकी पत्नियों के अभिलेख देकर वापस घर आ गया।

20 अगस्त, 2007

आज दिनांक 20 अगस्त मंगलवार को सी.आर.सी. रायमेर में प्रशिक्षण समाप्त हुआ।

हरीश-गिरीश ने झगड़ा किया। ब्लूप्रिंट समझाया। टी.ए. बिल भरवाया और भुगतान किया। सवेरे कुल उपस्थिति 6। भोजन और टी.ए. के समय उपस्थिति 11। सकलानी ने मिटाई खिलवाई। पुस्तक समीक्षा हेतु फोन से कई लोगों से संपर्क।

मुझे देखकर वे क्यों उड़ जाते हैं?

मेरे घर के सामने
डेंकण का एक पेड़ है
उस पेड़ पर घिंड़ुड़ी का घोंसला
घोंसले में तीन (बच्चे) चूजे।

चूजे मुझे देखकर
सर उठा लेते थे
चूजे मुझे देखकर
मुँह खोल लेते थे
घोंसले से बार-बार मुँह निकालकर
मेरे साथ कितनी ही बार
आँख मिचौली खेलते थे!

अब हो गए हैं बड़े
फुदकने लगे हैं यहाँ-वहाँ
फिर भी कई बार वे
देख लेते हैं मुझे टकटकी लगाकर

पर जब से बदल गए हैं
वे चिड़िया में
अब वे दूर-दूर तक
घूम आते हैं

हैरान हूँ मैं
मेरे पास जाने पर
वे क्यों उड़ जाते हैं ?

आज नौ दिवसीय प्रशिक्षण में एम.टी. के रूप में प्रतिभाग करने के बाद अपने विद्यालय में गया और ठीक साढ़े सात बजे उपस्थित हुआ। आज रोज की तरह दोनों स्वयं सेविका बिंदुलेश और केदारी उपस्थित थीं। केदारी आज नौ बजे स्कूल से चली गई थी उसे आँगनवाड़ी में सहायिका के पद पर आवेदन जमा करना था और वह अपना आवेदन जमा करने ब्लॉक मुख्यालय दुंडा चली गई। आज मेरा स्वाथ्य ठीक नहीं था और मैंने कोई कक्षा नहीं ली। केदारी ने जाने से पूर्व कक्षा चौथी और पाँचवीं में पढ़ने के अभ्यास पर निर्मित टी.एल.एम. में कुछ अभ्यास कराया। जिसमें निर्मित अभ्यास में से फूलों के नाम, फलों के नाम, जानवरों के नाम और खानेवाली चीजों के नाम ढूँढकर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिखने थे। बच्चों ने आधे अभ्यास किए। तब तक संस्कृत का पीरियड शुरू हो गया। बिमला ने संस्कृत में पढ़ने का अभ्यास कराया।

आज स्कूल में शिवदत्त जी आए थे जो चाइल्ड फ्रेंडली का कार्य कर रहे हैं। उन्हें एडवांस के रूप में दो हजार रुपए दिए। 26 तारीख तक उन्हें एक हजार रुपए और देने हैं।

आज शिक्षण कार्य प्रभावी नहीं हो पाया। मैंने तो एक भी कक्षा नहीं ली। छुट्टी के बाद रमेश, सुरेंद्र और उत्तम को उनके द्वारा तोड़ी गई रोड़ी का भुगतान किया। तीनों ने कुल 18 (अठारह) कटटे रोड़ी तोड़े और उन तीनों को चार सौ रुपए का भुगतान किया। रोड़ी तोड़ने के लिए कोई स्थानीय आदमी न मिलने के कारण बच्चों से यह काम करवाना पड़ा। परंतु यह कार्य उन्होंने अपनी सहमति से किया और छुट्टी के बाद किया।

आज लकड़ी लाने वाली महिला का भी भुगतान किया। उसे दो भारे लकड़ी के एक सौ सत्तर रुपए दिए। आज केदारी एक महिला की बनाई हुई स्वेटर बेचने के लिए स्कूल में लाई थी जो बहुत अच्छी नहीं थी। मैंने उसे कहा कि मैं उक्त गरीब महिला की वैसे ही मदद कर दूँगा। स्वेटर वह किसी और को बेच दे।

आज ही दो बच्चों को घी के पैसे का भुगतान किया। बच्चों से 14 तारीख को तीन किलो घी मँगवाया था। आज ही एन.पी.आर.सी. समन्वयक श्री बिष्ट जी का संदेश प्राप्त हुआ कि 27 तारीख को बी.आर.सी. में खाद्ययान्न संबंधी ऑडिट होना है तो कल उसकी तैयारी के लिए मानसिक तैयारी की।

आज पौने आठ बजे विद्यालय में पहुँचा। अधिकांश बच्चे स्कूल पहुँच गए थे लेकिन दोनों स्वयं सेविका साथी, विद्याकेंद्र लोदू की आचार्या श्रीमती बिमला और भोजन माता अभी तक नहीं पहुँच पाई थीं। मेरे आते ही पाँच-सात मिनट बाद वे भी आ गईं। प्रार्थना सत्र की गतिविधि हुई। प्रार्थना गाने के लिए कोई भी बच्चे आगे नहीं आना चाहते हैं। रोज ही उन्हें बार-बार कहके और कभी-कभी डाँट कर आगे

भेजना पड़ता है। इसी तरह राष्ट्रगान और प्रतिज्ञा भी बच्चे शुद्ध नहीं बोल पाते। प्रतिज्ञा बोलने में तो बहुत गलतियाँ करते हैं। मुझे स्वयं इस संबंध में गंभीर होना पड़ेगा। मुझे लगता है कि बच्चे पूरे प्रार्थना सत्र को एक बोझ की तरह लेते हैं। मुझे इस सत्र को रोचक बनाने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता है और मैं करूँगा भी।

आज भी मेरा स्वास्थ्य पूरी तरह से ठीक नहीं था। बदन टूट रहा था और थकान महसूस हो रही थी। पर आज सभी कक्षाओं में गया, स्वयं उपस्थिति ली और साथी लड़कियों को पढ़ाने के तरीके बताए। कक्षा चौथी और पाँचवीं के दोनों समूहों को पढ़ने के लिए बनाए अभ्यास पत्रक 2 पर अभ्यास कराया और उसमें से खाने वाली चीजों के नाम, सब्जियों के नाम, पशुओं के नाम, फूलों के नाम और आदमियों के नाम छँटवाए।

हर बच्चे की सीखने और समझने की गति अलग-अलग होती है। यही चीज अध्यापक का धैर्य विचलित कर देती है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक बच्चा हर विषय में एक ही गति से आगे बढ़े। पर ऐसा होता नहीं है। अगर हम इस मामूली सी बात को स्वीकार कर लें तो बच्चों को काफी मदद मिल सकती है।

पढ़ने के अपने इन तीन पत्रकों में बच्चों के अपने परिवेश के कई बार सुने समझे शब्दों का समूह और सरल कहानी जिसे वे आसानी से पढ़कर समझ सकते हैं, ने मेरी काफी मदद की। और मेरी नहीं आखिर यह स्वयं बच्चों की अपनी ही मदद थी। कक्षा चौथी और पाँचवीं के बीस बच्चों में से जहाँ केवल तीन बच्चों को ठीक से पढ़ना आता था, अब धाराप्रवाह पढ़ने वाले बच्चों की संख्या दस हो गई है। ये दस बच्चे न सिर्फ पढ़ी हुई सामग्री को समझने लगे हैं उसका विश्लेषण कर विषय वस्तु का वर्गीकरण भी करने लगे हैं। इस समूह के साथ अब मुझे कहानी पत्रक पर काम करना है।

दूसरे समूह के बच्चे कुछ शब्दों को पूरी तरह से और कुछ को अटक-अटक कर पढ़ पा रहे हैं परंतु जिन्हें पढ़ रहे हैं उसे समझकर पढ़ रहे हैं। हालाँकि यह गतिविधि दूसरी कक्षा के स्तर के लिए होनी चाहिए पर जब पाँचवीं के बच्चे दूसरी कक्षा के स्तर से भी नीचे थे तो मुझे यह प्रयोग सबसे पहले उन्हीं के साथ दोहराना पड़ा और मुझे आशातीत सफलता मिली है।

इसके साथ ही नई पाठ्यपुस्तकों की अवधारणा कि वर्णों की बजाय शब्द पठन से शुरुआत कर वर्णों की पहचान पर आएं, की धारणा को बल मिला है।

इस गतिविधि से बच्चा समझ कर लिख पा रहा है, इसका भी परीक्षण होता है। वह इस तरह कि मैंने पत्र में एक सौ अड़सठ शब्दों का संकलन किया है। वे शब्द जिन्हें बच्चे अक्सर सुनते रहते हैं अक्सर प्रयोग करते हैं और जो उनके लिए नितान्त अपरिचित नहीं हैं। मैंने पहले इन शब्दों का अनुकरण वाचन कराया। फिर उँगली रखकर प्रत्येक शब्द के हरेक वर्ण पर जोर देकर पढ़वाया। फिर शब्दों पर चर्चा कराई। जैसे जलेबी क्या है ? बच्चे जवाब देते हैं खाने की चीज, मिठाई। बच्चे अक्सर मातृभाषा के टोन में जवाब देते हैं जैसे मिठाई को

कहेंगे— मिटै। कुर्तुा क्युा है तुुु बच्चुुु कल कुवलुत हुुतल है — ललने कुी कुीऑ। यहुुलु ललने कल अरुथ है डहननल। तुुु बच्चुुु सुडुतते हैँ डर अडलव्यकुत डें डलतृडलषल कुे शडुडुु कुी डरडलर हुुतुी है। हुडलरुी डलरुडरकु शलकुषण डदुधतल बच्चुुु कुे इस तरह कुे डलषलई डुरडुुु कुुु न सुडरु हतुुतुसलहत करतुी है डलकुल उनकल उडलहलस डुी उडुतुी है। हुडलरल आड डलरुडरकु अधुडलडकु ठुुस डलनक डलषल कुी अडेषकुल रखतल है। ठुुस डलनक डलषल कुे शुदुध डुरडुुु कुे डुरतल रुदुध हुुतल है कुुु बच्चुुु कुी डलषलई अडलव्यकुत कुुु वलकसलत नहुुल हुुने देतल।

इस डुरतुरक से हुड शडुडुु कल खल खलते हैँ। आज कुछ बच्चुुु ने गुललडऑलडुन कुुु डूलुु कुी शुरेणुी डें ललखल। इसुी तरह कुछ बच्चुुु ने कुडेलुी कुुु कुऑह कल नलड डतलडल तुुु कडुडुुु ने तलतलुी कुुु कुलडुडल कुी सुुुी डें रखल। ऐसे डुरसुंग आने डर डरुऑ कुे ललए अऑऑ डलहुुल डललतल है। रडुडुी कुुु कडुडुुु ने रडुडुु कुे अरुथ डें ललडल और कहुल कुल इसे हुड डललुु डें लऑलते हैँ लडकुुु ने कहुल कुल रडुडुी डलतलने कुी कुीऑ है। कुुरलड कुुु डलषलुुु ने खलने वलले कुुरलडरुल कुे अरुथ डें ललडल और इस शडुडुु कुुु खलने वललुी कुीऑ कुी सुुुी डें रखल। डकडुी कुुु सुथलनलड डलषल डें डकडुल कहुते हैँ। बच्चुुु डकडुी और डकडुल कुुु एक हुी कुीऑ नहुुल सुडुऑ डलए। बच्चुुु डशुु और डकुषलडुुु कल अंतर तुुु सुडुऑते हैँ डर डशुुु और कुीतुुु कल अंतर नहुुल सुडुऑते। इसुीललए उनहुुने तलतलुी, और डलतुंगुु कुुु कुलडुडल कुी सुुुी डें डललल और ऑलडकुलुी, कलकुुरुऑ और सलड कुुु डशुुु कुी सुुुी डें ललखल। तुुु यहु गतलवलडुल एक सलथ डलषल, हुडलरुे डरलवेष और वलऑऑन आडल वलषडुुु डर एक सलथ डरुऑ कर डलने कल डलहुुल देतुी है इसे डें अब डहसुस कर रहल हुुँ। हललुुकल इसे डनलने कल डेरल उदुदेशुड डलतुर डदुने कुे कुुशल कल वलकलस करनल थल।

ककुषल तुीन कुे सुडुुह एक कुुु कुलसडें आठ डें से डुुऑ हुी बच्चुुु उडसुथलत थे, से हलसलल वलले कुुऑ करलए और दुुसरुे सुडुुह कुलसडें डलरह डें से नुुी हुी बच्चुुु उडसुथलत थे, से डलनल हलसलल वलले कुुऑ कल अभुडलस करलडल। कुुऑ कुे ललए डहलडे डनलओ कुी गतलवलडुल कल डुरडुुु कर रहल हुुँ। कुैसे तेरह कल डहलऑल डनलनल है तुुु बच्चुुु तेरह कुुु दुुु डलर कुुऑतुुु तुुु तेरह दुुुी कुलतनल हुुतल है डतल कुल ऑलएगल। इसुी तरह तेरह कुुु आठ डलर कुुऑने डर तेरह अठे कल डलन डुरलडुत हुुगल। इस गतलवलडुल डें बच्चुुु रुऑ लेते हैँ। कडुडुु डलर रते हुुए डहलडुुु कुुु इस वलडुल से नलकललते हैँ तुुु उनहुुे लकुष तड करने कल डुुकल डललतल है और उतुर कुी डुरषुऑ हुुने डर खुशुी हुुतुी है। और डलर—डलर कुुऑ कुे अभुडलस कल डुुकल डुी डललतल है। आज सुडुुह दुुु से ऑडनल सुडुुह एक डें शलडलल हुुु गडुडुु वहु अब हलसलल वलले कुुऑ करने लऑुी है।

ककुषल एक और दुुु कुे बच्चुुु कुे सलथ डुुकलल वलरुतललड तुुु हुुआ डर उनकुे सलथ ललखलत गतलवलडुल नहुुल करवलई। इन दुुुनुु ककुषलकुुु कुुु डलदुलेश ने देखल।

24 अगसुत, 2007

आऑ डुरलत: ऑलर डऑे उठल आशुरड कुे धुडलन ककुष डें धुडलन कलडल। डुुऑ डऑे से ऑ: डऑे तक सुनलनलडल से नलवृत हुुआ और ऑ: डऑे से सलडे सलत डऑे तक डुन: धुडलन और सतुसुंग डें डुैठल। सलडे नुुी डऑे तक आशुरड डें हुी रहल और सुसुथल दुवलरल आऑलऑलत अंतरुवलदुललडुी डुरतलडुुुगलतलकुुु कुे डुरतलडलऑुी बच्चुुु कुे डुरडलण डुरतुर डनलए और उनकल अडललेखुीकरण कलडल।

ठीक दस बजे प्रातः जिला पंचायत के सभागार में 'जिला संदर्भ समूह बालिका शिक्षा' की बैठक में सम्मिलित होने हेतु उपस्थित हुआ। सभागार में चार-पाँच महिलाएँ बैठी थीं। एक-दो लोग बाहर टहल रहे थे। ग्यारह बजे डी.ई.ओ. और बी.एस.ए. साहब पहुँचे।

सभी बैठकों की तरह यह बैठक भी औपचारिक बैठक प्रतीत हुई। सी.एम.ओ. के प्रतिनिधि ने स्वास्थ्य और पोषण के बारे में कुछ बातें कहीं। लड़कियों को संतुलित आहार लेना चाहिए, हार्मोन बदलाव के समय शिक्षकों थोड़ा सजग रहना चाहिए, लड़कियों को इन बदलावों की जानकारी दी जानी चाहिए, स्कूल में मेडिकल किट होनी चाहिए आदि-आदि।

भुवनेश्वरी महिला आश्रम के प्रतिनिधि ने लड़कियों के लिए चलाए जा रहे अपने कार्यक्रमों की जानकारी दी और रेडियो कार्यक्रम के बारे में बताया। इसी तरह महिला समाख्या की प्रतिनिधि ने अपने काम गिनाए।

इस बैठक में मुझे ऐसा कुछ भी नहीं लगा जो अंतर्मन को छू सके। कहीं जागृति का सबब बन सके। सभी सरकारी कार्यक्रमों की तरह इसमें भी दो बजे तक काम पूरा करने की हड़बड़ाहट मची रही। सबने अपनी-अपनी समस्याएँ गिनाईं। के.जी.बी.बी. वालों की समस्याओं पर सबसे अधिक समय बर्बाद हुआ। समाधान किसी की समस्याओं के नहीं निकले। हाँ पुरोला में सामुदायिक सहयोग से के.जी.बी.बी. के लिए व्यवस्था जुटाने का प्रसंग अवश्य प्रेरक रहा। परंतु ऐसे उदाहरणों से न हम सीख लेते हैं न उन स्रोतों को प्रोत्साहित कर पाते हैं और नहीं अन्यत्र ऐसे प्रयोग कर पाते हैं।

हमारा पूरा तंत्र नकारात्मक धारणाओं के दल-दल में डूब गया है। मैंने विचार रखा कि प्राथमिक स्कूलों में एक प्राथमिक उपचार की चिकित्सा किट होनी चाहिए जिसमें सामान्य रोगों की दवा जैसे बुखार खाँसी, अतिसार आदि की दवाएँ हो। मैंने कहा कि इस किट के प्रयोग का एक-दो दिवसीय प्रशिक्षण भी अध्यापकों को दिया जाना चाहिए। तो मेरी बात को डी.ई.ओ. ने तपाक से काट डाला। बोले, 'अगर जिस दिन बच्चे का स्वास्थ्य खराब हो उसी दिन प्रशिक्षण प्राप्त अध्यापक अनुपस्थित रहे तो? खेल और विज्ञान सामग्री की तरह यह किट भी बंद ही पड़ी रहे तो? फिर उन्होंने प्रसंग बदल दिया और बोले, 'देखो भई ! मैं जिस भी स्कूल में गया मैंने किसी भी टीचर को पढ़ाते हुए नहीं पाया। अब अगर मैंने किसी को एब्सेंट पाया या पढ़ाते हुए नहीं पाया तो कठोर कार्यवाही करूँगा।'

मैं चुप हो गया। मैंने उनसे तर्क करना ठीक नहीं समझा। मैं जानता हूँ वे शिक्षकों के किसी भी सम्मेलन में अपने संबोधन में यही बातें दोहराते हैं।

इस बैठक में नौगाँव के ए.बी.एस.ए. श्री पांडे जी ने दो बहुत ही सार्थक सुझाव बहुत ही विनम्र किंतु बहुत ही दबंग भाषा में रखे। पहला – एक ही शिक्षक को बार-बार एम.टी. न बनाया जाए, उसे उसके स्कूल में रहने का मौका भी दिया जाए। और दूसरा रैमीडियल टीचिंग के प्रयोग सत्र के आरंभ में ही किए जाएँ। शीतकाल में रैमीडियल टीचिंग न हो यह नितांत अव्यावहारिक है।

शेष लोगों ने घुमाफिरा कर अपनी ही समस्याएँ ही रखीं।

जिला समन्वयक श्री भट्ट जी का प्रयास अच्छा था। इस बैठक को सफल बनाने के उनके इरादे भी मजबूत दिखाई दे रहे थे। पर टीम कमजोर हो तो क्या किया जा सकता है। श्री भट्ट जी का संबोधन भी अच्छा रहा।

तीन बजे कार्यशाला समाप्त हुई। मैं आज ही धौतरी लौट आया।

25 अगस्त, 2007

आज प्रातः चार बजे उठा। चार से पाँच बजे प्रातः तक एक घंटा ब्रह्माकुमारी आश्रम के ध्यान कक्ष में ध्यान किया। बाहरी दुनिया के अति भटकाव भरे वातावरण से मन को अंतःकरण की गहराइयों में ले जाने की अनुभूति अति सुखकर होती है। मन परम शांति से भर उठता है और दिन भर ताजापन, हल्कापन, स्थिर भाव महसूस होता है। ध्यान मन की शक्ति प्रदान करता है। उपराम भाव जगाता है और विपरीत परिस्थितियों में स्थितप्रज्ञ रहने की क्षमता पैदा करता है।

पाँच से छः बजे तक दैनिक कार्यों से निवृत्त हुआ और छः बजे फिर आश्रम के सत्संग की कक्षा में बैठा। जिसमें आधा घंटा ध्यान और एक घंटा प्रवचन होता है जिसमें ईश्वरीय वाक्य पढ़े जाते हैं उन पर चर्चा होती है और मानवीय मूल्यों को जीवन में उतारने में क्या-क्या कठिनाई होती है अथवा मानवीय मूल्यों पर स्थिर रहने से जीवन किस प्रकार सुगन्धमय हो जाता है, पर चिंतन और चर्चा होती है। एक घंटे की यह कक्षा बहुत ही ऊर्जामय होती है। दिन भर के लिए इस कक्षा से अथाह शक्ति प्राप्त होती है।

प्रातः सात बजे की बस से धौतरी आया। सवा नौ बजे धौतरी पहुँचा और सीधे स्कूल गया। स्कूल में बिंदुलेश उपस्थित थी। वह पढ़ा रही थी, खाना बन रहा था। आज मैंने स्कूल में एक भी कक्षा नहीं पढ़ाई। सोमवार 27 तारीख को बी.आर.सी. में एम.डी.एम. का ऑडिट है। इसलिए एम.डी.एम. की पंजिकाओं को एक बार देखा और उन्हें पूरा किया। 2003 से एम.डी.एम. शुरू हुआ। इसलिए तब से आज तक के संपूर्ण बिल वाउचर और कैशबुक और लेजर की जाँच की। पहले वाले प्रधानाध्यापक जी का काम अस्पष्ट था इसलिए पूरे काम को अपने ढंग से मेन्टेन किया। इसी कार्य में पूरा दिन लग गया।

26 अगस्त, 2007

आज रविवार को घर पर ही रहा। एम.डी.एम. के अभिलेखों को एक बार फिर से देखा। अपूर्ण बिल वाउचर को पूरा किया। आज का दिन भी इस छूटे काम को पूरा करने में लग गया। आज व्यास बहिन जी का एम.डी.एम. का काम भी पूरा किया। उनका भी कई महीनों का अभिलेखीकरण अधूरा था उसे मिलकर पूरा किया और ऑडिट के लिए उनकी भी कैशबुक, लेजर, और गार्ड फाइल पूरी की।

मछलियाँ

मछलियाँ तैरती हैं
मछलियाँ बहती नहीं हैं
मछलियाँ तैरती हैं।

मछलियाँ बहती नहीं हैं
मछलियाँ तैरती हैं।
मछलियाँ उद्गम की ओर तैरती हैं।

मछलियाँ बहती नहीं हैं
मछलियाँ तैरती हैं।
मछलियाँ प्रवाह के विपरीत तैरती हैं।

आदमी तैरता है
आदमी तैरता नहीं है,
आदमी बहता है।

आज एम.डी.एम. अभिलेखों का ऑडिट कराने बी.आर.सी. डुण्डा गया। स्कूल में अकेला होने के कारण अवकाश रखना पड़ा। प्रातः घर से 7 बजे चला और 11 बजे बी.आर.सी. डुण्डा पहुँचा। बी.आर.सी. हमारे स्कूल से 65 कि.मी. दूर है।

बी.आर.सी. में ऑडिटर लोग पहुँचे हुए थे। दो ऑडिटर थे और दोनों के पास अध्यापकों की दो पंक्तियाँ लगी थीं। सभी में अपना ऑडिट पहले कराने की होड़ लगी थी।

बी.आर.सी. में ऑडिट के लिये कमीशन लिया जा रहा था। कमीशन मिलने के बाद अध्यापकों को एक पर्ची दे रहे थे। पर्ची दिखाने के बाद ही ऑडिटर, ऑडिट कर रहे थे। ऑडिट पूरा हो जाने के बाद तय कमीशन ऑडिटर को देकर शेष राशि बी.आर.सी. स्टाफ आपस में बाँट लेते हैं। ऑडिटर का कमीशन या तो प्रति विद्यालय के लिए निश्चित की गई राशि के हिसाब से, छात्र संख्या के हिसाब से या प्रति विद्यालय जितनी राशि का ऑडिट किया जाना है कि हिसाब से तय किया जाता है। आज की राशि छात्र संख्या के आधार पर तय की गई थी। 30 छात्र संख्या तक 300 रु., 30 से 50 तक 500 रु. 50 से 100 तक 600 रु. और 100 से ऊपर 700 रु. तय थी।

शिक्षक पहले तो कमीशन देने में खूब हील-हुज्जत (आना-कानी) करते हैं। कुछ हल्ला-गुल्ला करते हैं, कुछ नेतागिरी दिखाने की कोशिश करते हैं पर बिना पैसा दिए कोई भी ऑडिट नहीं करा पाता, क्योंकि ऑडिटर अभिलेखों का निरीक्षण कर खामियों की एक लम्बी-चौड़ी सूची संबंधित अध्यापक को पकड़ा कर उन्हें ठीक कर लाने को कहते हैं जिसे ठीक कर पाना किसी भी कीमत पर संभव नहीं होता।

उसका कारण यह होता है कि जब कोई भी राशि स्कूल को भेजी जाती है तो उसे कैसे और किस प्रकार से व्यय किया जाना है ये निर्देश स्पष्ट रूप से शिक्षकों को नहीं दिए जाते। खास कर निर्माण कार्यों के संबंध में तो यह होता ही है। हर स्कूल की अपनी स्थानीय परिस्थितियाँ होती हैं। शिक्षा समिति के सदस्य, ग्राम प्रधान, अभिभावकों और यहाँ तक कि साथी शिक्षकों का आपसी बर्ताव और काम कैसे, कहाँ और कितना करना होगा का नजरिया अलग-अलग होता है।

कई स्कूलों में निर्माण कार्यों पर ग्राम प्रधान हावी हो जाते हैं। कार्य अपने ढंग से कराने पड़ते हैं पर बिल वाउचर सभी जगह एक राशि के लिए एक जैसे चाहिए होते हैं। जाहिर है सामान जैसे – सीमेंट, रोड़ी, बजरी, सरिया, पेंट आदि तो जहाँ जितनी और जैसी आवश्यकता होती है उस अनुसार मँगाते हैं पर बिल वाउचर आखिर में ऑडिट और जे.ई. के दिशा निर्देशों के अनुसार भिड़ाने पड़ते हैं। अगर कार्य शिक्षा समिति का अध्यक्ष (ग्राम प्रधान) करा रहा होता है तो वह एक तरह से टेकेदारी कर रहा होता है। वह चाहता है कि पूरे काम में अपने लिए भी अच्छी-खासी रकम बना ले। जहाँ महिला अध्यापक हैं वहाँ यह स्थिति अधिक नाजुक है। क्योंकि अगर काम कराने की जिम्मेदारी प्रधानाध्यापक स्वयं लेता है तो उसे मजदूरों की देखरेख और काम की गुणवत्ता पर नजर रखने के लिए कक्षाएँ छोड़नी पड़ती हैं और स्कूल

में अतिरिक्त समय देना पड़ता है। चाहे चार बजे के बाद काम कर रहे लोगों को देखना हो, मजदूर-मिस्त्री ढूँढने गाँव जाना हो या सामान खरीदने बाजार जाना हो। कई बार छोटे-छोटे सामान के लिए बीच-बीच में कक्षा या स्कूल छोड़ना बाजार या दुकान पर जाना होता है। दुकान अक्सर गाँव से कई कि.मी. दूर होती है। शिक्षक को अपना पैसा और समय देकर सामान की पूर्ति करनी पड़ती है। आमतौर पर महिलाओं से ये सब काम नहीं होते। कई पुरुष शिक्षक भी इस पचड़े में नहीं पड़ते। काम ग्राम प्रधान या किसी गाँव के आदमी को टोली नायक बनाकर उसके जिम्मे छोड़ देते हैं। उन लोगों को काम की गुणवत्ता से कोई लेना-देना नहीं होता है।

आजकल एक और दूषित परम्परा गाँवों में चल पड़ी है। जिस व्यक्ति या परिवार ने स्कूल के लिए जमीन दान दी होती है या देता है वह किसी और को स्कूल की भूमि पर काम नहीं करने देता। खुद ठेकेदार बन कर काम करता है। शिक्षक मजबूर हो जाते हैं। अनावश्यक विवाद में वे नहीं पड़ना चाहते और अपने विभाग से अपने स्कूल के लिए स्वीकृत राशि को अपने अनुसार खर्च करने में उनके हाथ बंध जाते हैं। शिक्षक की भूमिका केवल बैंक पर दस्तखत करने और बैंक से पैसा निकाल कर ठेकेदार को देने तक सिमट कर रह जाती है। कुछ दबंग शिक्षक इस लचर व्यवस्था के खिलाफ खड़े भी होते हैं। अपने बलबूते पर अच्छा काम करते भी हैं पर कमीशन, लेन-देन की कड़ी से वे भी अपने आप को चाह कर भी अलग नहीं रख सकते या नहीं रख पाते। तो यह कमीशन स्कूल से शुरू होकर ऑडिटर पर खत्म होता है।

सबसे पहले बिल वाउचर भिड़ाने के लिए दुकानदार को कमीशन 2 से 10 प्रतिशत तक। जे.ई. को कमीशन (किए गए काम का आंकलन और एम.बी. यानी मेंजरमेंट बुक में स्वीकृति की राशि के बराबर भिड़ाने के लिए) 2.5 प्रतिशत तक, ग्राम प्रधान को 2 से 5 प्रतिशत तक बैंक पर हस्ताक्षर करने के लिए। अगर वह स्वयं ठेकेदार नहीं है तो और यदि वह शिक्षा समिति के अध्यक्ष के नाते ठेकेदार बनकर काम खुद नहीं कर रहा हो। (हाँ इतना अवश्य होता है कि ऐसी स्थिति में वह शिक्षक को उसकी पर्सनैलिटी देखकर ऑडिट के खर्च के नाम पर छोटी-मोटी रकम अवश्य दे देता है, बिल-वाउचर लाकर दे देता है और जे.ई. सहित विभाग की कमीशन खुद बाँट आता है। काम की गुणवत्ता से उसे कोई लेना-देना नहीं होता।)

सी.आर.सी. समन्वयक, बी.आर.सी. समन्वयक, डिप्टी बी.ई.ओ. को काम कितना प्रतिशत पूर्ण हो गया है या 100 प्रतिशत पूर्ण हो गया है, प्रमाणित कर फाइल को फॉरवर्ड करने के लिए; फाइल को साहब तक पहुँचाने के लिए; और आखिर में अंतिम किश्त भुगतान या स्कूल बन रहा है तो बिल्डिंग के पूर्ण भुगतान सहित हैण्डओवर की अंतिम अनुमति चाहने हेतु डी.पी.ओ. कार्यालय तक शिक्षक को कई चक्कर लगाने पड़ने हैं। इस दौरान उसे डॉट खाकर, उपेक्षा झेलकर, कई नसीहतें और फाइल को बार-बार सुधारकर लाने की झिड़कियाँ सुनने के साथ पैसा बाँटना पड़ता है। कई बार यह सब वह अपने स्वाभिमान की कीमत पर करता है। क्योंकि कमीशन खाने वाले कितने भी हों काम की गुणवत्ता की जिम्मेदारी आखिर उसी के ऊपर फिक्स होती है। काम किसी ने भी कराया हो, अगर गाँव का कोई आदमी गुणवत्ता को लेकर उच्च अधिकारियों को शिकायत भेजे तो, सारी जिम्मेदारी शिक्षक पर ही फिक्स होती है। उसी को जवाब देना होता है। जाँच बैठे और दोष पाया जाए तो रिकवरी उसी के वेतन से होनी निश्चित होती है। इसलिए किसी भी कीमत पर वह कम से कम document

में कमी नहीं रखना चाहता है। उसके बाद भी ऑडिटर उसके कागजों में खामियाँ निकालते हैं वहाँ अंतिम चढ़ावा चढ़ाने के बाद ही वह खुद को निश्चित समझता है।

ऐसा भी नहीं है कि विभाग या अधिकारी शिक्षक को काम करने की स्वतंत्रता नहीं देते। अब सर्वशिक्षा अभियान के अंतर्गत स्वीकृत राशि को खर्च करने के लिए निर्देश दिए जाने लगे हैं। अगर ग्राम प्रधान शिक्षक के साथ अनावश्यक हस्तक्षेप करता है तो उसे निर्देश पत्र में अधिकार दिया गया है कि वह निर्माण कार्यों की राशि विभागीय निर्देशानुसार खर्च करने के लिए "ग्राम शिक्षा समिति" के संयुक्त खाते को एकल संचालन में बदल सकता है।

परन्तु कोई भी शिक्षक ऐसा नहीं करता। ऐसा करना "जल में रहकर मगर से बैर लेना" जैसा है। क्योंकि शिक्षकों को ग्राम प्रधान से कई तरह के काम करने पड़ते हैं। हम शिक्षकों की अपनी भी बहुत सी कमजोरियाँ हैं। कई बार देर से स्कूल जाना, जल्दी छुट्टी करना, फ्रैंच मारना, बच्चों पर पूरी तरह से ध्यान न देना, कभी खाना न बनाना आदि। अगर गाँव में किसी से मन मुटाव हो जाए और कोई झूठी शिकायत कर दे तो बचने के लिए ग्राम प्रधान के प्रमाण की जरूरत होती है। लोक-व्यवहार की दृष्टि से भी यह उचित नहीं लगता। इस तरह के बर्ताव से ग्राम प्रधान अपमानित महसूस करते हैं। अगर "एकल खाता संचालन" करा भी दिया जाए तो भी कमीशन की प्रक्रिया से तो शिक्षक फिर भी नहीं छूटता। उस कड़ी का हिस्सा उसे बनना ही पड़ता है।

मुझे लगता है कि पैसे के कामों में सभी विभागों में यही हाल है। मेरे एक मित्र ने एक बार बताया कि जिला पंचायत वाले जब कोई काम स्वीकृत करते हैं तो ठेकेदार या कार्यदायी संस्था से अपना 30 प्रतिशत कमीशन पहले ही वसूल लेते हैं।

यह दोष स्थायी हो चुका है और इसके सुधार की गुंजाइश लगती भी नहीं है। मैंने कई बार सोचा कि किसी जिला या राज्य स्तर की कार्यशाला में सुझाव रखूँ कि क्यों न खुलकर संबंधित विभागीय अधिकारियों/कर्मचारियों का एकमुश्त कमीशन निर्धारित कर लिया जाए और इसके लेन-देन के लिए सी.आर.सी. समन्वयक को अधिकृत कर दिया जाए। कई बार परोक्ष रूप से वे यह काम करते भी हैं। ऐसा करने से शिक्षक का न सिर्फ समय बचेगा, कार्यालयों का चक्कर लगाने, कर्मचारियों की उपेक्षा और कई बार झिड़कियाँ झेलने की जिल्लत से भी वह बच जाएगा। शायद 2-3 प्रतिशत शिक्षक ही ऐसे होंगे जो इस तरह के लेन-देन के कामों में रुचि लेंगे। आम शिक्षक इन ठेकेदारी जैसे कामों और रोज के दाल-भात के हिसाब लगाने के कामों से बचना चाहता है।

तो दिनांक 28 अगस्त 2007 को मैंने भी 63 बच्चों के एम.डी.एम. ऑडिट के लिए ए.बी.आर.सी. को 500 रुपए दिए। पर्ची कटाई। ऑडिटर ने रजिस्टर पर लाल पेंसिल से टिक किया। (कहीं हस्ताक्षर नहीं किए) और मैं घर आ गया।

बाद में साथी शिक्षकों ने बताया कि ऑडिटर ने बाकी शिक्षकों को बिठाकर बताया कि कैशबुक कैसे मैन्टेन करते हैं और लेजर कैसे बनाया जाता है। अगर मैं बी.आर.सी. से 1 बजे घर के लिए न चलता तो फिर वहीं रुकना पड़ता और होटल का खर्चा अतिरिक्त होता। ऑडिट के लिए ब्लॉक मुख्यालय आने के लिए शिक्षकों को कोई यात्रा-भत्ता नहीं दिया जाता है। यह खर्चा अपनी जेब से करना पड़ता है।

आज 7 बजे स्कूल पहुँचा। विद्याकेंद्र की शिक्षिका भी आजकल अपना केंद्र विद्यालय में ही संचालित कर रही हैं। आजकल गाँव के लोग अपनी भैंस और दूसरे पशुओं को लेकर ऊपर डाँडू (पहाड़) गए हैं। वर्षात के सीजन में इस गाँव के परिवार और अधिक ऊँचाई पर चले जाते हैं, जहाँ उन्होंने अस्थायी घर बना रखे हैं। वहाँ आजकल चारा पर्याप्त होता है और भैंस खूब दूध देती है। पहाड़ की ऊँचाई पर उनकी खेती भी है। पशु वहाँ ले जाने से खेतों के लिए गोबर भी हो जाता है। कुछ लोगों के वहाँ सेब, खुमानी और आड़ू के बाग हैं। ऊँचाई की ढलवा जमीन पर आलू भी पर्याप्त मात्रा में होता है। कुछ लोग मटर भी उगाते हैं जो उनकी नगदी फसलें हैं।

ऊँचाई के स्थानों पर सीढ़ीनुमा ढलवा खेतों में और बंजर जमीन पर यहाँ के लोग भाँग के बीज बो देते हैं। सितंबर में भाँग के पौधे परिपक्व हो जाते हैं। आजकल सितंबर की तपती धूप में वे लोग भाँग की पत्तियाँ हथेलियों में मसलकर चरस तैयार करते हैं। जो गुपचुप तरीके से महँगे दामों पर बिकता है।

बच्चे भी परिवार के साथ चले जाते हैं। स्कूल उनके लिए पाँच से सात किलोमीटर तक दूर पड़ता है। विद्याकेंद्र, आँगनवाड़ी और कक्षा एक, दो के बच्चे तो इतनी दूरी तय करने में थक जाते हैं। उनके लिए दोनों ओर (आना-जाना) की दूरी कम से कम दस किलोमीटर तक हो जाती है। छोटे बच्चों की उपस्थिति काफी घट जाती है। विद्याकेंद्र में कोई भी बच्चा नहीं आता। इसलिए वहाँ की शिक्षिका मेरे स्कूल में ही पढ़ाती है। यह स्थिति अक्टूबर अंत और मौसम अगर ज्यादा ठंडा नहीं हुआ तो नवंबर प्रथम सप्ताह तक रहती है।

नवंबर में ऊँचाई के खेतों में ये राड़ा (सरसों की प्रजाति) या आलू बो देते हैं और नीचे के खेतों में गेहूँ की बुआई के लिए नवंबर में नीचे उतर आते हैं। सितंबर-अक्टूबर में उपस्थिति 10/63 से 30/63 से ऊपर नहीं जा पाती।

अभिभावक इन दो महीनों में हम शिक्षकों की खूब चिरौरी करते हैं। वे कहते हैं, “गुरु जी गैर हाजिर रहने के लिए बच्चों को डाँटना-पीटना मत। हम ही उनको घर में टोकते रहते हैं। हमारी साल भर की आमदनी का यही एकमात्र साधन है। आप जानते हैं धान और गेहूँ की खेती से निकलता ही क्या है? सालभर में 5-7 बोरी धान भी नहीं होता है” आदि-आदि। गाँव के लोगों से हम शिक्षकों के परिवार जैसे रिश्ते हो जाते हैं। उनकी हर भलाई-बुराई में हम शामिल रहते हैं। उनकी गोपनीयता हमारी गोपनीयता हो जाती है।

आज मैंने कुछ नहीं पढ़ाया। मूड ठीक नहीं था। घर से स्कूल के लिए चलते समय सड़क पर सीमेंट के दुकानदार से झड़प हो गई थी। मैं स्कूल में किचन का काम कराने के लिए उनकी दुकान से सीमेंट, सरिया लाया था। उससे सीमेंट-सरिया का बिल माँगा तो वह कमीशन माँगने लगा। मैंने कहा कि मुझे उतने का ही बिल चाहिए जितने का सामान मैं ले गया हूँ। मैं फर्जी बिल नहीं माँग रहा हूँ जो तुम मुझसे कमीशन माँगो। वह अकड़ गया और कहने लगा कि चाहे सामान के बराबर बिल माँगो या कम-ज्यादा पाँच प्रतिशत कमीशन तो देना ही पड़ेगा। मैंने उसे चेताया कि अगर उसने बिल नहीं दिया तो मैं उपभोक्ता फोरम में उसकी शिकायत करूँगा। आखिर मुझे स्कूल में बिल तो लगाना ही पड़ेगा। उपभोक्ता फोरम की बात पर दुकानदार भड़क गया और मुझे जो चाहे कर लेना की धमकी देने लगा। मैंने उससे अधिक विवाद करना ठीक नहीं समझा और स्कूल चला आया।

स्कूल में आकर उस दुकानदार के लिए शिक्षा समिति की ओर से नोटिस बनाया और बच्चों के हाथ प्रधान जी के हस्ताक्षर करवाने के लिए भेज दिया।

इस बीच स्कूल में एक सज्जन आए। वे लीसे के ठेकेदार थे। वे बच्चों की शिकायत करने आए थे। उन्होंने कहा कि बच्चे घर जाते समय जंगल में चीड़ के पेड़ों पर लीसा इकट्ठा करने के लिए लटकाए गए टिन के डिब्बों को पलट देते हैं या उखाड़कर फेंक देते हैं। वे बोले, “पेड़ पर लटके ये डिब्बे इन छोकरोँ का क्या बिगाड़ते हैं ? आप इनको खूब डाँटना और इन सब की खूब पिटाई करना, जो जंगल के रास्ते घर जाते हैं।”

मैंने उन सज्जन को कहा कि हाँ मैं इन शैतान बच्चों को जरूर कहुँगा और समझाऊँगा। थोड़ी देर गपशप करने के बाद वे चले गए। उनके जाने के बाद मैंने बच्चों को समझाया तो जरूर पर उन्हें डाँटा या पीटा नहीं। मुझे अपने बचपन के दिन याद हो आए और मैं मन ही मन मुस्कराने लगा।

जब मैं छोटा था तो हम भी ऐसा ही करते थे। छुट्टी के दिन डंगर चराने या लकड़ी-घास लाने जंगल जाते और चीड़ के पेड़ों पर लटक रहे लीसे से भरे शकोरोँ (टिन के शंक्वाकार पात्र) को उलट देते थे। कुछ को घर ले आते। घर लाकर दीपावली में लीसे को धान के भूसे के साथ मिलाकर उसे आँगन में दियों की तरह जलाते। ताजे लीसे को माँ और दादी अपनी फटी एड़ियों पर भी लगाती थीं। आग सुलगाने में भी लीसा काम आता था।

एक बार हमने डामर से भरी पी.डब्ल्यू.डी. की एक ट्राली सड़क से नीचे 500 मीटर की गहरी खाई में पलट दी थी। हुआ यूँ कि पी.डब्ल्यू.डी. के कर्मचारी सड़क पर डामर बिछा रहे थे। हम सात-आठ बच्चे स्कूल जा रहे थे। कुछ मजदूर डामर से भरी ट्राली धकेल कर ले जा रहे थे। उन्होंने हमसे कहा कि हमारे साथ इसको धक्का दो। हमने धक्का देना शुरू किया। धक्का देते-देते हमारे मन में शैतानी आ गई। हमने जोर लगाया और ट्रॉली सड़क के किनारे की ओर मोड़ दी। मजदूरों की हमारे साथ कुछ न चली और देखते ही देखते ट्रॉली सड़क से पलट गई और पाँच-छः सौ मीटर गहरी खाई में जा गिरी। कुछ देर तक हम उसके गिरने का तमाशा देखते रहे फिर भागकर स्कूल पहुँच गए। पीछे गैंग का मेट हमारी शिकायत लेकर स्कूल में आ गया। हम डर कर थर-थर काँपने लगे। सोचा, आज तो अच्छी तरह धुनाई होगी। गुरु जी ने हमें बुला लिया पूछा, “क्या तुमने ट्रॉली गिराई ?” हमने कहा, “सर इन लोगों ने बोला कि हमारे साथ ट्रॉली को धक्का दो। हमने दिया। अचानक ट्रॉली नीचे की ओर मुड़ गई। हम थाम नहीं सके और वह खाई में जा गिरी। हमारा कोई दोष नहीं है।” गुरु जी ने मेट से पूछा, “क्या आपने इनको ट्रॉली धकेलने के लिए बोला था ?” उसने ना नहीं कहा। तो गुरु जी बोले, “फिर गलती तुम्हारी है। तुम बच्चों से काम कराना चाहते थे।” उन्होंने हमें थोड़ा डाँटा और क्लास में भेज दिया। मेट भी गर्दन लटकाकर वापस चला गया। बाद में हम ठहाका लगाकर हँसते रहे।

उन सज्जन के जाने के बाद बच्चे प्रधान जी से नोटिस पर साइन कराकर ले आए। मैंने उसे लिफाफे में पैक कर बच्चों को ही उसे गाँव

के डाकघर से रजिस्ट्री कराने को दे दिया।

भोजन माता आज देर से पहुँची तो आज खाना नहीं पकाया।

उसी समय स्कूल के पास से एक अर्थी गुजरी। पता चला कि गाँव में किसी जवान महिला की मृत्यु हो गई है तब तक मध्यान्तर का समय हो गया था। सबने खड़े होकर उस महिला के शोक में दो मिनट का मौन रखा और मध्यान्तर के बाद बच्चों की छुट्टी कर दी।

मुझे कल 7 से 9 सितंबर तक अवकाश पर रहना था। इसलिए शिक्षा आचार्य बिमला को स्कूल का चार्ज समझाया।

स्कूल खुलते ही हमारे अभिभावक और शिक्षा समिति के सदस्य शिवदत्त जी भी आए थे। शिवदत्त जी मिस्त्री का काम करते हैं और उन्हें किचन की मरम्मत तथा इस साल प्राप्त धनराशि के 5000 रुपयों से किचन के ऊपर लैंटर डालने का काम दिया है।

शिवदत्त जी ने पहले दिन ईंट बना रखी थी। आज उन्हें काम समझाया, लैंटर कितनी ऊँचाई पर पड़नी है, रोशनदान कहाँ रखना है, फर्श का ढाल किधर आना चाहिए और रैक कहाँ-कहाँ पड़ेगी ? आदि।

शिवदत्त जी एक बुजुर्ग आदमी हैं। उनकी उम्र 70 साल से ऊपर ही होगी। पर उनमें ताकत और ऊर्जा मुझ जैसे युवकों जैसी ही है। उनमें काम की समझ बहुत अच्छी है। वे हमारे विद्यालय की शिक्षा समिति के सदस्य भी हैं। हमारे स्कूल में उनके तीन बच्चे पढ़ते हैं। दो लड़के और एक लड़की। उन्होंने 58 साल की उम्र में दूसरी शादी की उनकी पत्नी उम्र में महज 34-35 साल की होगी। पहली पत्नी से केवल लड़कियाँ हैं।

मैं बीच-बीच में काम की देखरेख भी करता हूँ और उनके साथ गपशप भी लगाता हूँ। वे अपने जीवन के अभाव व संघर्षों की कहानी भावुक हो कर सुनाते हैं। वे कहते हैं, "गुरु जी, पहली पत्नी से मेरे कोई लड़का नहीं हुआ तो मैं जीवन से हताश और निराश हो गया था। फिर मेरे हितैषी मित्रों ने मुझे 58 साल में दूसरी शादी के लिए उकसाया। मैंने कर ली। पर अब मैं सुखी हूँ। बेटों और बेटों के लिए मुझे संघर्ष करना पड़ता है और मैं काम खुशी-खुशी करता हूँ। शिवदत्त जी बहुत रोचक किस्से-कहानियाँ सुनाते हैं। उनके किस्से मुझे इतने रोचक लगे कि कई बार सोचा इन किस्से-कहानियों को "शिवदत्त जी की कहानियाँ" शीर्षक से संकलित करूँगा।

स्कूल से घर के लिए चला तो रास्ते में मातबरलाल जी मिल गए। उन्होंने कहा कि मेरे साथ उपखण्ड शिक्षा अधिकारी के पास चलो, मेरा एक महत्वपूर्ण काम करा दो। उनका काम यह था कि उनकी आठवीं पास लड़की की उम्र स्कूल के अभिलेख में कम करवानी थी। उसने स्कूल से आठवीं पास कर लिया था और उसकी शादी भी हो गई थी। आगे पढ़ाई उसने नहीं की इसलिए वह टी.सी. नहीं ले गई थी।

हाल ही में उनके गाँव में आँगनवाड़ी कार्यकर्त्ता के पद के लिए आवेदन माँगे गए थे। वह भी आवेदन करना चाहती थी पर उसकी उम्र

केवल छः महीना कम पड़ रही थी। वह अनुसूचित जाति के परिवार से थी और आरक्षण के अन्तर्गत उसकी नियुक्ति की पूरी संभावना थी। मैं मातबर के साथ उपखण्ड शिक्षाधिकारी के पास गया। उनसे अनुनय-विनय की। वे मान भी गए और एफीडेविट का हवाला देकर संबंधित प्रधानाध्यापक को अभिलेख में जन्मतिथि संशोधित करने का आदेश दे दिया।

उपखण्ड शिक्षाधिकारी के कार्यालय से वापस आते वक्त डुण्डा में जहाँ तिब्बती लोग रहते हैं गया। वहाँ मैं बौद्ध मठ में लामा जी से मिलना चाहता था पर वे नहीं मिले।

रात को ब्रह्माकुमारी आश्रम में रुका। आश्रम के कार्यक्रमों – ध्यान, प्रवचन सुनने में भाग लिया। रात को आश्रम द्वारा अपने वार्षिकोत्सव पर रखी गई अन्तर्विद्यालयी छात्र प्रतियोगिताओं के कागजात पूरे किए और कार्यक्रम संचालित करने की रूपरेखा तैयार की। संस्था द्वारा मुझे इस कार्यक्रम में सहयोग देने के लिए बुलाया गया था। आज देर रात तक काम करता रहा। थोड़ी देर इण्टरनेट पर काम किया 11:30 पर सो गया।

7, 8, 9 सितंबर, 2007

दिनांक 7 से 9 सितंबर तक उत्तरकाशी में रहा। तीन दिन राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय उत्तरकाशी में बच्चों की प्रतियोगिता संचालित/सम्पादित कराने में संस्था के सदस्यों को सहयोग दिया। महाविद्यालय के ऑडिटोरियम में ब्रह्माकुमारी संस्था के सदस्यों के साथ सहयोग किया और 11 विद्यालयों के डेढ़ सौ बच्चों की विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाईं।

प्रश्नोत्तरी, क्विज, स्वरचित काव्य, चित्रकला (पोस्टर), भाषण, लोकगीत, निबंध और लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में जूनियर (कक्षा 6 से 8) और सीनियर (कक्षा 11 व 12 वीं) के बच्चों ने बढ़चढ़ कर भाग लिया। प्रतियोगिता में तीन सरकारी स्कूल – राजकीय इण्टर कालेज उत्तरकाशी, राजकीय इण्टर कालेज जोशियाड़ा व राजकीय बालिका इण्टर कालेज उत्तरकाशी के बच्चे और शेष 8 निजी स्कूलों के बच्चे प्रतिभागी थे। सभी स्कूल नगर के प्रतिष्ठित स्कूल हैं। जहाँ बच्चों का प्रवेश कड़ी प्रवेश परीक्षा के आधार पर दिया जाता है। इन स्कूलों में सम्पन्न परिवारों के बच्चे पढ़ते हैं। एक भी सरकारी जूनियर हाई स्कूल ने इस प्रतियोगिता में आमन्त्रण भेजने के बाद भी भाग नहीं लिया। सरकारी स्कूल के शिक्षकों में एक भय व्याप्त है कि उनके बच्चे निजी स्कूलों के बच्चों से बेहतर प्रदर्शन नहीं कर सकेंगे। सरकारी शिक्षकों में यह भी धारणा है कि ये गरीब घरों के बच्चे कुछ सीख नहीं पाते हैं। क्योंकि उनके परिवारों का माहौल वैसा नहीं है जैसा कि निजी स्कूलों में पढ़ रहे बच्चों के घर में होता है।

जबकि असलियत यह है कि हम सरकारी शिक्षक, शिक्षणेत्तर गतिविधियाँ संचालित करने के लिए बच्चों को अतिरिक्त समय और श्रम नहीं दे पाते या देना नहीं चाहते।

बच्चों का मौलिक प्रदर्शन, पोस्टर, एकल-गायन, लोकगीत और लोकनृत्य प्रतियोगिताओं में देखने को मिला। भाषण, निबंध और स्वरचित काव्य (कविता लेखन-वाचन) में बच्चे आमतौर पर बड़ों का लिखा हुआ लिखते और सुनाते हैं। भाषण सबके रटे हुए होते हैं जिसे वे कृत्रिम तरीके से बोलते हैं और एक वाक्य भूल जाने पर आगे का सारा अंश फिर नहीं कह पाते। इसी तरह निबंध और कविता लेखन में भी होता है। निबंध की भाषा, वाक्य विन्यास और कई बार पूरी थीम बताती है कि यह बच्चे का खुद का सोचा और लिखा हुआ नहीं है। अभिभावक भाषण की भाषा को अधिकाधिक जटिल, बौद्धिक और रूढ़ बनाने की कोशिश करते हैं। वे भाषण में ऐसे शब्द ढूँढते हैं जिन्हें समझना श्रोताओं के लिए दिक्कत भरा काम हो जाता है और इस तरह के प्रयोग को वे अपनी होशियारी समझते हैं। ऐसा किसी अन्य का लिखा text जब बच्चे अपना कहकर बोल रहे होते हैं तो तनाव की लकीरें उनके चेहरों पर साफ झलकती हैं। यही हाल कविता लेखन का भी होता है।

क्विज तो एक तरह से रटंत विद्या का जीवंत उदाहरण है। आखिर रटकर याद की गई सूचनाओं को उगल देना कौन-सी होशियारी है और इस तरह की प्रतियोगिताओं से हम बच्चों को क्या देना चाहते हैं या क्या विकसित करना चाहते हैं।

बजाय इस तरह पूर्व तैयारी के बच्चों को प्रतियोगिता स्थल पर ही 5 मिनट पूर्व अपने अनुभवों से जुड़े विषय दिए जाने चाहिए। विषय प्रतियोगिता आरंभ होने से आधा-एक घंटा पहले देने चाहिए ताकि बच्चों को सोचने और चिंतन करने का थोड़ा वक्त मिल सके। ये विषय भाषण और निबंध लेखन दोनों के लिए दिए जा सकते हैं। इससे सोचकर लिखने और सोचकर बोलने का कौशल विकसित होगा। साथ ही बच्चे के मौलिक चिन्तन उसके पूर्व के अध्ययन और विषय विशेष पर उसकी अपनी राय का पता चल सकेगा।

गायन, नृत्य और चित्रकला में बच्चे अपनी मौलिक प्रतिभा का खूब खुलकर प्रदर्शन कर पाते हैं। क्योंकि इन विधाओं में अभिव्यक्ति देने के लिए उनके सामने प्रतिबंध नहीं होते या बहुत सीमित और कमजोर होते हैं।

मैंने देखा कि चित्रकला प्रतियोगिता में बच्चे तल्लीन होकर आसपास की दुनिया से बेखबर अपनी कल्पनाओं को आकार देने में जुटे थे। कागज पर उतरी बच्चों की मूर्त कल्पना को प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान देना बेमानी लगता है। एक ही विषय को हर बच्चा अलग-अलग चित्रित करता है। मैंने देखा कि, "मेरे सपनों का भारत" विषय का चित्रण एक बच्चे ने अनेक वैज्ञानिक आविष्कारों और भौतिक सुविधा सम्पन्न परिवेश के रूप में चित्रित किया तो दूसरे बच्चे ने प्रकृति की सम्पन्नता से भरपूर समाज दिखाया - हरे-भरे जंगल, फूलों पर मंडराती तितलियाँ, कलकल कर बहती नदियाँ, सुन्दर पार्क में खेलते बच्चे, हरे-भरे मैदानों में चरते पशु आदि। तो तीसरे बच्चे ने दिखाया एक खुशहाल गाँव - चौपाल पर बतियाते बुजुर्ग, गले मिलती महिलाएँ, उत्सव मनाते लोग, एक दूसरे के गले मिलती महिलाएँ, उत्सव मनाते लोग, एक-दूसरे के गले में बाहें डाले स्कूल जाते बच्चे आदि। इन चित्रों को किन मानकों के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जाए? क्या केवल रंग संयोजन, चित्रों की स्पष्टता या कुछ और। उद्देश्य को चित्रित करने में तो अपने-अपने नजरिए से सभी सफल हैं। फिर भी हर स्कूल में, हर प्रतियोगिता में बच्चों के चित्रों को नहीं उनकी भावनाओं को कम ज्यादा आंका जाता है। मुझे लगता है इस

तरह की प्रतियोगिताएँ न सिर्फ़ भद्दा मजाक हैं, बच्चे की भावनाओं के साथ खिलवाड़ भी है और अन्याय भी। क्या सब बच्चों को समान रूप से पुरस्कृत किया जा सकता है ? खुद को शिक्षा के पुरोधे समझने वाले निजी और स्कूलों के शिक्षकों, प्रबन्धकों और शिक्षा अधिकारियों को यह सब समझने में अभी वक्त लगेगा। अभी तक तो बच्चे शिक्षकों और अभिभावकों दोनों के अपनी आकांक्षा और अहं-पूर्ति के साधन भर हैं।

बिल्ली मौसी और चूहा

एक बार बिल्ली मौसी ने
पकड़ा चूहा खूब मोटा,
चूहा तो था मोटा-ताजा
मगर दाँत था उसका टूटा।

एक दाँत का चूहा देखकर
हँस पड़ी मौसी बिल्ली,
सरपट भागा मोटा चूहा
पकड़ हो गई, उस पर ढीली।

आज नौ बजे धौंतरी पहुँचा। आज सी.आर.सी. में गया। सी.आर.सी. समन्वयक श्री बिष्ट जी 9 बजे पहुँच गए थे। 10 बजे से 12 बजे तक हमेशा की तरह नीरस मीटिंग चली। अध्यापक आते रहे और अपनी-अपनी डाक (सूचनाएँ) जमा कराते रहे और जाते रहे। आखिर तक 4-5 शिक्षक बचे वे भी गपशप लगाकर चले गए।

मासिक बैठक या यह दिन एक तरह से छुट्टी का ही दिन होता है। हमारे सी.आर.सी. समन्वयक इतने योग्य नहीं हैं कि साथी शिक्षकों को 2-4 घण्टे बाँध कर रख सकें या उनके बीच सार्थक चर्चा का माहौल बना सकें।

मीटिंग के बीच में कर्मचारी संगठन के नेता लोग चंदा माँगने के लिए आ गए। उन्होंने चंदे की बात शुरू की ही थी कि मैं वहाँ से उठकर चल दिया। मुझे राजनीति से सख्त नफरत है और नेतागिरी का हौवा दिखाकर अपने ही साथी शिक्षकों को गुमराह करने वाले लोगों से भी।

शिक्षक नेताओं ने शिक्षा में अपनी भूमिका बहुत सीमित कर ली है। केवल वेतन, सेवा नियमावली या स्थानान्तरण संबंधी मुद्दों तक। ये बात सही है कि अगर सरकार शिक्षकों की सेवा संबंधी मामलों में किसी प्रकार के प्रतिकूल निर्णय लेती है तो शिक्षक नेता दमदार आवाज उठाते हैं और सरकार को शिक्षकों के सामने झुकना पड़ता है पर क्या शिक्षक केवल सरकारी नौकर हैं ? शिक्षा अगर सर्वांगीण विकास का उपकरण है तो क्या शिक्षा के बाकी आयामों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षक-नेताओं की कोई भूमिका नहीं होनी चाहिए ?

मैं डी.पी.ई.पी. और फिर सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत आयोजित शिक्षक-प्रशिक्षणों में शुरुआती दौर से ही जुड़ा रहा। मैंने किसी शिक्षक-नेता को लगन से प्रशिक्षण-कक्ष में बैठे नहीं देखा। नेता होने का फायदा प्रशिक्षण कक्ष से गायब रहने के लिए उठाया। किसी नेता ने प्रशिक्षण की विषयवस्तु और प्रशिक्षण की गुणवत्ता को बेहतर करने के लिए कोई सुझाव या टिप्पणी की हो कभी नहीं सुना या पढ़ा नहीं। हाँ प्रशिक्षण के दौरान अगर खाने-पीने या दूसरी व्यवस्थाओं में कमी होती है तो वे जरूर हो हल्ला मचाते हैं। उसमें भी शिक्षकों के हित कम और अपने स्वार्थ संधान की नीयत ज्यादा होती है। कई बार वे ऐसा केवल इसलिए करते हैं कि उनकी बी.आर.सी. समन्वयक से पटती नहीं है या उससे ईर्ष्या भाव रखते हैं।

शिक्षक नेता घूम-घूम कर शिक्षकों से चंदा वसूलते हैं। पर जब वार्षिक चुनाव होते हैं तो आपस में ही एक-दूसरे पर उस चंदे के दुरुपयोग के आरोप लगाते हैं और एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं। चंदा लेने तो बहुत आते हैं पर ईमानदारी से चंदे का हिसाब देने कोई नहीं आता। एक आम शिक्षक कभी नहीं जानता कि उसे दिए पैसे का क्या और कैसा उपयोग होता है। राज्य के लिए पाठ्यक्रम बनता है। पाठ्य पुस्तकें लिखी जाती हैं। शैक्षणिक (academic) समीक्षाएँ होती हैं। पर इन तमाम गतिविधियों, जो शिक्षा की सबसे महत्वपूर्ण आयाम हैं, में शिक्षक-संगठन का कोई सकारात्मक या नकारात्मक हस्तक्षेप नहीं होता। शायद ही किसी शिक्षक नेता के पास पाठ्यक्रम की प्रति हो या वह कुछ पाठ्यपुस्तकों और उसमें समाहित पाठ्यवस्तु के बारे में कुछ बता पाए। स्व0 पदमसिंह जैसे विरले ही शिक्षक नेता

होंगे जिनका अपने स्कूल की शिक्षण-प्रक्रिया में सक्रिय योगदान रहता हो। बाकी तो शायद अपने स्कूल के चार बच्चों के नाम भी नहीं बता पाएँगे।

स्थानांतरण नीति में भी शिक्षक नेता कोई सार्थक पहल नहीं कर पाए। सत्र में स्थानांतरण होते हैं तो नेताओं और ऊँची पहुँच वाले लोगों की पत्नियों के स्थानांतरण सुविधाजनक स्थानों में हो जाते हैं। यहाँ भी शिक्षक नेता अपने दबाव के चलते अपने लोगों को सुविधाजनक स्थान दिला देते हैं। जिस शिक्षक की पहुँच नहीं होती वह जिन्दगी भर दूर दराज में भी पड़ा रहता है। कितने ही ऐसे स्कूल हैं जहाँ 10 बच्चों पर तीन शिक्षिकाएँ हैं और डेढ़ सौ बच्चों पर एक शिक्षक। क्या कर पाए हैं हमारे शिक्षक नेता इस कुव्यवस्था को सुधारने के लिए?

शिक्षकों को शिक्षणेत्तर कार्यों से दूर रखने के लिए शिक्षक-नेता खूब हो हल्ला मचाते हैं। पर शिक्षक इस अतिरिक्त बोझ से मुक्त हो सकें ऐसा दबाव वे सरकार पर नहीं बना सके हैं। हाँ कई बार शिक्षकों को गुमराह करने जरूर टपक पड़ते हैं।

जून 2008 में बी.एल.ओ. का विरोध आखिर जुलाई में काम करना ही पड़ा। स्कूल और बच्चों का नुकसान हुआ।

नवंबर-दिसंबर 2006 में फोटो पहचान पत्र बनवाने, फोटो खिंचवाने, फोटो पहचान पत्रों की जाँच और मतदाता सूची के पुनरीक्षण कार्य में प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों को लगाया गया। यह काम शत-प्रतिशत पूर्ण हो इस बात के लिए तहसीलदार से लेकर जिलाधिकारी तक सभी प्रशासनिक अधिकारियों पर सख्त दबाव था। शिक्षक नेताओं ने इस कार्य के विरोध के लिए शिक्षकों को उकसाया। कुछ ने प्राप्त आदेशों को लौटाया भी पर जब शिक्षकों पर प्रशासन से दण्डात्मक कार्यवाही का आदेश निर्गत होने लगे तो शिक्षक नेताओं ने अपने हाथ पीछे खींच लिए।

इसी तरह जून की छुट्टियों में जब फिर मतदाता सूची पुनरीक्षण का काम शिक्षकों को दिया गया तो नेताओं ने फिर आदेश वापस करवाए। मगर आखिर जुलाई में फिर से यह काम शिक्षकों को करना ही पड़ा।

हमारे शिक्षक नेताओं ने राज्य परियोजना निदेशक उत्तराखण्ड को लिखित रूप से सुझाव दिया कि सभी शिक्षक प्रशिक्षण ग्रीष्मकालीन अवकाश की अवधि में सम्पन्न हो जाने चाहिए। बीच सत्र में प्रशिक्षणों से बच्चों की पढ़ाई बाधित होती है।

राज्य परियोजना कार्यालय ने इस सुझाव पर अमल किया और 21 मई 2008 से पहले ही प्रशिक्षण मॉड्यूल, राज्य स्तरीय की रिसोर्स पर्सन और जनपद वार एम.टी. प्रशिक्षण सम्पन्न करवा लिए। 25 मई से 30 जून तक प्रशिक्षण पूर्ण करने का शेड्यूल बन गया। पर जैसे ही प्रशिक्षणों का पहला चक्र आरंभ हुआ हमारे शिक्षक-नेताओं ने छुट्टियों में प्रशिक्षण कराने का विरोध करना शुरू कर दिया। आधे-अधूरे प्रशिक्षण से शिक्षकों को घर भगाया गया।

फिर शिक्षक नेता अपने ही जाल में फँस गए। प्रशिक्षण जून में ही पूरे हुए पर उससे जो अव्यवस्था पैदा हुई उससे क्या प्रशिक्षण की गुणवत्ता प्रभावित नहीं हुई होगी।

इस तरह हमारे शिक्षक नेता कई बार अपना दोहरा चरित्र प्रदर्शित करते रहते हैं।

तो मैंने चंदा माँगने आए शिक्षक नेताओं को चंदा नहीं दिया। मैंने कहा, “पिछले साल के चंदे का हिसाब अगर आप दे सकते हैं तो मैं नए साल का चंदा देने पर विचार कर सकता हूँ।” मैंने नहीं दिया पर बाकी शिक्षकों ने तो दिया ही। पैसा उगाहने के हथकण्डे भी हमारे शिक्षक-नेता खूब जानते हैं।

मीटिंग से वापस लौटा तो सीमेंट-सरिया के दुकानदार ने बिल वाउचर दे दिए। शायद उसे नोटिस मिल गया होगा। वह बिल देते हुए बोला, “गुरु जी ! आप तो बेकार नाराज हो गए थे।” मैंने कोई जवाब नहीं दिया। बिल लेकर घर आ गया।

आज स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। घर पर आकर थोड़ी देर अखबार पढ़ा और नवाज शरीफ की वापसी का समाचार जानने के लिए टी.वी. देखने निखिल के घर चला गया।

टी.वी. खोला तो उस पर मध्य प्रदेश के शिक्षक का समाचार आ रहा था। इस शिक्षक ने स्थानीय समाचार पत्र में अपनी मसाज और कामेच्छा पूर्ति के लिए किसी महिला मित्र की तलाश का विज्ञापन दिया था।

पुलिस ने विज्ञापन पढ़कर टीचर का स्टिंग ऑपरेशन कर डाला और थाने ले आई। पुलिस उससे बार-बार भद्दे सवाल कर मजे ले रही थी। शिक्षक शर्म से चूर हुआ भविष्य में ऐसा न करने की कसमें खाकर बार-बार गिड़गिड़ा रहा था।

चैनल वाले बार-बार वही दृश्य दिखा रहे थे। मेरे मन में कई तरह के सवाल उठ रहे थे।

ये चैनल वाले इस तरह के समाचारों को दिखाकर क्या कहना चाहते हैं ? क्या दिखाने “योग्य ” और क्या न दिखाने योग्य रह गया है ? पुलिस ने इस निरीह अध्यापक पर स्टिंग कर कौन सा बहादुरी का काम कर लिया ?

मैं सोच रहा था कि जिस देश और समाज में चोरी छिपे कुछ भी अनैतिक नहीं है वहाँ की पुलिस को, वहाँ के चैनलों को और वहाँ के पत्रकारों को “नैतिक” को परिभाषित करने का अधिकार किसने दिया ?

वह शिक्षक बगैर विज्ञापन दिए अपना उद्देश्य पूरा कर सकता था। तब पुलिस और पत्रकारों को भनक भी न लगती। उसने अपनी भावना व्यक्त कर दी। लोकतंत्र में आजादी के क्या मायने हैं ?

11 सितंबर, 2007

आज से विद्यालय का समय 10 बजे से 4 बजे तक कर दिया गया है। आज ठीक साढ़े नौ बजे स्कूल पहुँचा। अधिकांश बच्चे स्कूल पहुँच गए थे। दस बजे के स्कूल में बच्चे लगभग समय से पहुँच जाते हैं। क्योंकि खाना स्कूल में मिल जाता है। माताएँ उन्हें सवेरे-सवेरे स्कूल

भगा देती हैं। बहुत दूर (छानियों) से आने वाले छोटे-छोटे बच्चे भी कीचड़ में लथपथ साढ़े दस बजे तक पहुँच जाते हैं। भोजन माता भी आज समय पर पहुँच गई।

स्कूल पहुँचा तो देखा आफिस का ताला टूटा हुआ है। इसे किसी ने जबरदस्ती पत्थर मार कर तोड़ा था। परन्तु अन्दर कोई नुकसान नहीं हुआ था। स्कूल में ताले टूटना आम बात हो गई है। ऐसा पहले भी कई बार हो चुका है। कई बार स्कूल से ताले तोड़कर बिस्कुटों की पेटियाँ चोरी हो चुकी हैं। एक बार कोई चावल ले गया। मैं कई बार ताले बदल चुका हूँ। हमारा स्कूल बस्ती से काफी दूर एकांत में है। स्कूल पहुँचने पर बरामदे में बीड़ी के टुकड़े और नमकीन के खाली पैकेट मिलते हैं। पता नहीं चल पाता है कि यह हरकत कौन करता है।

ताला टूटा देखकर मेरा मन खिन्न हो गया। विद्यालय परिवेश को शानदार और आकर्षक बनाने की मेरी संकल्पना को फिर धक्का लगा।

विद्यालय के प्रति समुदाय के लोगों की उपेक्षा और कुछ शरारती तत्वों की इस तरह की हरकत का परिणाम यह होता है कि, मन आक्रोश से भर जाता है। कई बार मन करता है कि इस स्कूल में ओर इनके बच्चों के लिए कुछ नहीं करना है। पर बच्चों के बीच जाते ही उनके मासूम चेहरे देखकर गुस्सा काफूर हो जाता है। फिर सोचने लगता हूँ, “आखिर छलकपट से दूर इन नन्हे-मुन्ने बच्चों का दोष क्या है ?” फिर मैं अपनी शक्ति और सामर्थ्य के साथ उनके बीच जूझने लगता हूँ।

बच्चों के स्कूल आते ही बिमला और बिंदुलेश ने कमरों की सफाई करवा कर टाट बिछवाई और प्रार्थना आरंभ करवा दी। दस बजे प्रार्थना शुरू हुई और 10:30 पर समाप्त होकर बच्चे कक्षाओं में बैठ गए।

बच्चों के बैठते ही, बच्चों ने भोजन माता को चावल, दाल, तेल, नमक और मसाले आदि सामान दिए और भोजन माता ने भोजन बनानाशुरू कर दिया। बच्चों को अब अन्दाज आ गया है और वे साथियों की गिनती कर सही अनुपात में खुद ही भोजन सामग्री भोजन माता को दे देते हैं। आज भोजन माता ने ठीक सवा बारह बजे भोजन तैयार कर लिया था।

मैंने पहले पीरियड में कक्षा चार और पाँचवीं के बच्चों से स्कूल के परिवेश की सफाई करवाई। क्योंकि स्कूल के चारों ओर घास और झाड़ियाँ उग आई थीं। खुद भी बच्चों की मदद करता रहा। गाँव के बच्चे इस तरह के काम खूब दक्षता से कर लेते हैं। शारीरिक काम करने में उन्हें कोई झिझक नहीं होती। बजाय उन्हें खूब मजा आता है।

एक घंटा सफाई कार्यक्रम के बाद इन दोनों कक्षाओं (कक्षा 4 और 5) को एक साथ बिठा कर पंचतंत्र की कथा सुनाई जो कक्षा 4 में तीसरा पाठ है। कहानी पर बातचीत की। मौखिक प्रश्न उत्तर किए और बच्चों से पाठ से ऐसे शब्द छाँटने को कहा जिनके अर्थ वे नहीं समझ पा रहे हैं। बच्चों ने कठिन शब्द अपनी-अपनी उत्तर पुस्तिकाओं में लिखे। मैंने फिर उन शब्दों पर बातचीत की और उनके अर्थ बच्चों से ही निकलवाने का प्रयास किया। फिर सारे शब्द श्यामपट पर लिखे और उनके अर्थ लिखकर सब बच्चों को अपनी उत्तर पुस्तिका में नोट करने को दिए।

किसी एक विषय पर काम करते हुए बच्चों के साथ लिखित और मौखिक कार्य एक साथ करने में मध्यान्तर तक का पूरा समय बीत जाता है। जो बच्चे ठीक से लिख-पढ़ नहीं पाते उनके साथ विषयवस्तु को समझाने के लिए बातचीत अधिक करनी पड़ती है। चौथी-पाँचवीं कक्षा में आधे बच्चे ऐसे हैं जिन्हें लिखने-पढ़ने में अभी कठिनाई होती है पर मौखिक बातचीत में वे पाठ्यवस्तु को समझ भी लेते हैं और प्रश्नों के उत्तर भी सही देते हैं।

मध्यांतर के बाद इन्हीं कक्षाओं में सामाजिक विषय में फसलों, खेती और सिंचाई के साधन पर बातचीत की। लिखित कार्य कुछ नहीं कराया। अंतिम पीरियड में विज्ञान में शरीर के आंतरिक अंगों के बारे में बताया और घर से फेफड़ों के चित्र बनाकर लाने को दिया।

कक्षा 3 के बच्चों को बिमला ने देखा और कक्षा 1-2 के बच्चों को बिंदुलेश ने।

आज की कुल उपस्थिति 53/63 थी। सितंबर प्रथम सप्ताह से उपस्थिति कम होने लगती है। बरसात बंद होते ही जब सितंबर में धूप खिलने लगती है तो बच्चे परिवार के सदस्यों के साथ भाँग लगाने के लिए जाने लगते हैं। दो महीने बच्चे इस काम में व्यस्त रहते हैं।

घर आकर चाय पी, अखबार पढ़ा और चकमक का अगस्त अंक पढ़ा। 5 से 6:30 तक बाजार टहलने गया।

9 से 10:30 डायरी लिखी। 11 बजे तक कादंबिनी पढ़ी। 11 बजे सो गया।

13 सितंबर, 2007

आज आकस्मिक अवकाश पर रहा। आज सवेरे साढ़े सात बजे जागा और नौ बजे तैयार होकर बाजार पहुँचा। आज तयशुदा कार्यक्रम के अनुसार अपने शिक्षक साथी दिवंगत हरीश असवाल के घर में सांत्वना देने गया। साथ में एन.पी.आर.सी. समन्वयक श्री बिष्ट जी, गिरीश थपलियाल, सोबती व्यास, रजनी चौहान, जबरा देवी और रविदत्त भी थे। धौंतरी से दस बजे हम सभी लोग दस बजे चले और बारह बजे के लगभग हरीश के गाँव न्यूगाँव पहुँचे। रास्ता बहुत विकट था चार-पाँच किलोमीटर की चढ़ाई के बाद हम उनके गाँव पहुँचे।

घर में मातम छाया हुआ था। मिलने वालों का ताँता लगा हुआ था। हम लोग हरीश के बड़े भाई गिरीश असवाल और उनके पिताजी से मिले। उन्हें सांत्वना दी और घंटा भर उनके घर पर बैठे रहे। साथी महिलाएँ दिवंगत की माँ और पत्नी से भी मिली।

हरीश बहुत तेज तर्रार अध्यापक था। दबंग और बेबाक टिप्पणी के लिए वह न तो संकोच करता था और डरता था। वह तेज दिमाग का युवक था पर व्यसनों का शिकार था। अच्छा अध्यापक वह नहीं था। अध्यापकों और जनसमुदाय के बीच वह झगड़ालू और ड्यूटी के मामले में लापरवाही के लिए बदनाम अध्यापक था, पर साफ हृदय के लिए सभी के बीच लोकप्रिय था। वह अक्सर झगड़ता रहता था पर दिल में कोई कलुश नहीं रखता था। उसके व्यसनों की आदत ही उसे ले डूबी।

वह नशे में धुत्त रात के लिए घर से चला और एक चट्टान से जा फिसला। अगली सुबह बहुत खोजबीन के बाद उसकाशशव मिल पाया

और उसे भी बहुत कड़ी मेहनत के बाद रस्से डालकर चट्टान से निकाला जा सका।

01 अक्टूबर, 2007

आज पौने 10 बजे स्कूल पहुँचा। स्कूल में आज अकेला था। आज केवल 18 बच्चे उपस्थित थे। सभी बच्चों को एक साथ बिटाकर पहले सुलेख लिखने को दिया फिर श्रुतलेख लिखवाया और श्रुतलेख में गलतियाँ ढूँढने के लिए कापियाँ उन्हीं के बीच एक-दूसरे को जाँचने के लिए दे दीं।

बच्चे एक-दूसरे की कापियों को खूब गौर से जाँचते हैं और अधिकाधिक गलतियों ढूँढने की कोशिश करते हैं। ऐसा करने से उनका अपना भी भाषा सुधार होता है।

मध्यांतर तक सभी बच्चों को भाषा का कार्य ही कराया। कक्षा 1-2 के 4 बच्चों को शब्द पढ़ने और लिखने को दिए शेष 14 बच्चों को पढ़ने के लिए कहानी-पत्रक दिए और पढ़ी गई कहानी पर पाँच-पाँच प्रश्न बनाने को कहा।

बच्चे शुरू-शुरू में केवल संज्ञानात्मक क्या, क्यों, कहाँ, कौन पर आधारित प्रश्न बनाते हैं। जैसे दी गई कहानी का शीर्षक था – “दो बकरियाँ।” इस कहानी पर बच्चों ने इस तरह प्रश्न बनाए –

1. पुल पर कौन बैठा था ?
2. दूसरी बकरी कहाँ चर रही थी ? आदि

मध्यांतर के बाद बच्चों का टैस्ट लिया और 2:30 पर कल गाँधी जयंती के लिए साफ-सुथरे होकर आना कहकर बच्चों की छुट्टी कर दी।

मैंने चार बजे तक सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के 2 कक्षाओं के रजिस्टर भरे और 4 बजे घर के लिए चला।

बादल

काले बादल, भूरे बादल
धुंधले बादल, उजले बादल।
ओढ़े चादर रंग-विरंगी
अंबर भर में फैले बादल।

कभी गरजते, कभी बरसते
कभी दौड़ते, कभी ठहरते।
पल भर में कब आसमान से
छूँमतर हो जाते बादल।

देख जमीं के सूखेपन को
जब तरसैं तब बरसैं बादल।
झड़ी सुहानी, पानी-पानी
जब हर्षे तब बरसैं बादल।

सूरज को ढक लेते बादल
चंद्रा को ढक लेते बादल।
देख धरा की हरियाली को
मंद-मंद मुस्काते बादल।

आज गाँधी जयंती थी। नौ बजे स्कूल पहुँचा। बच्चे भी 9 बजे तक पहुँच गए थे। झंडारोहण की व्यवस्था थी। पड़ोस से सबल माँगा। झंडे के पाइप के लिए गड़ढा खोदा। रस्सी लगाई, झंडा तैयार किया और ध्वज दंड के आधार पर चूने से सजाकर उस पर चक्र बनाया। बच्चों ने पंक्ति बनाई। समूह गीत गाए और नारे लगाए।

ठीक 10 बजे ध्वजारोहण किया। आज एन.पी.आर.सी. समन्वयक, कुछ अभिभावक और प्रधान जी आए थे। ध्वजारोहण के बाद सब बच्चे एक साथ बैठे। बच्चों ने 8-10 गीत, नृत्य और कविताएँ प्रस्तुत कीं।

मैंने गाँधी जी, लालबहादुर शास्त्री और अन्य देशभक्त शहीदों के बारे में बच्चों को बताया और मिष्ठान्न वितरण कर 11:30 पर बच्चों को छोड़ दिया।

उसके बाद एन.पी.आर.सी. समन्वयक ने कार्यालय में बैठकर कोटिकरण प्रपत्र भरा। बच्चों के बिना टैस्ट लिए शैक्षिक सम्प्राप्ति में स्कूल को 'बी' और भौतिक स्थिति में 'ए' श्रेणी दी।

घर आकर अल्मोड़ा जाने की तैयारी की। पाठ्यक्रम की पुस्तकें पलटी और मन ही मन दक्षता आधारित प्रश्नों के स्वरूप बनाता रहा। पहले की कार्यशालाओं में तैयार प्रश्नों का भी अवलोकन किया। आज जल्दी सो गया। कल एल.जी.पी. की राज्यस्तरीय प्रश्नपत्र/ब्लू प्रिंट कार्यशाला में अल्मोड़ा जाना है।

3 अक्टूबर से 10 अक्टूबर 2007 तक

दिनांक 03 अक्टूबर को घर से सवेरे नौ बजे अल्मोड़ा के लिए चला। अल्मोड़ा में एल.जी.पी. के अंतर्गत बन रहे दक्षता आधारित प्रश्नपत्रों के लिए ब्लूप्रिंट निर्माण कार्यशाला में प्रतिभाग करने जाना है।

रातलघार में दिनेश नौटियाल मिले। श्रीनगर होते हुए हम लोग रात कर्णप्रयाग पहुँचे और वहीं होटल में रुके। होटल में थोड़ी देर ब्लूप्रिंट पर चर्चा की और थोड़ा गृहकार्य किया। लंबे सफर में थकान हो गई थी दस बजे सो गए।

4 अक्टूबर को प्रातः सात बजे कर्णप्रयाग से चलकर ग्वालदम, गरुड़ और कौसानी होते हुए 4 बजे अपराह्न अल्मोड़ा पहुँचे। वहाँ रहने की व्यवस्था सेवानिधि संस्थान में की गई थी। थोड़ी देर में डायट प्राचार्य श्री चौबे जी और सौरभ भी वहाँ आ गए। उनके साथ कल के कार्यक्रम को लेकर बातचीत हुई।

खाने की व्यवस्था डायट में की गई थी जो सेवानिधि से डेढ़ किलोमीटर के फासले पर है। दिन में घूमे और अल्मोड़ा का लाला बाजार देखा।

5 अक्टूबर से 7 अक्टूबर तक ब्लूप्रिंट निर्माण कार्यशाला में भाग लिया। मैंने हिंदी समूह में काम किया। इस समूह में आठ लोग थे। ग्रुप का नेतृत्व करने का अवसर मुझे ही दिया गया था। तीनों दिन सभी ने लगन और मेहनत से काम किया।

7 अक्टूबर को अल्मोड़ा में ही रुके। आज भी शाम को बाजार घूमा और घूमते-घूमते प्राथमिक शिक्षा और अल्मोड़ा के सौन्दर्य पर बातचीत होती रही।

8 अक्टूबर को जागेश्वर घूमने गए। जागेश्वर मंदिर समूह आठवीं और ग्यारहवीं सदी के आकर्षक मंदिर समूह हैं। इसी शैली और परंपरा के मंदिर उत्तरकाशी के लाखामंडल में मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है एक ही राजा या राज परिवार द्वारा एक ही समय बनाए हुए मंदिर हैं। हाल ही में लाखामंडल की खुदाई में प्राप्त छोटे-छोटे मंदिर और उनके भीतर स्थापित शिवलिंगों की प्रतिकृति जागेश्वर के प्रांगण में बने छोटे-छोटे मंदिरों जैसी ही है। जागेश्वर में ही म्यूजियम देखा। म्यूजियम बहुत अच्छा बना है और इसके भीतर अनेक प्राचीन मूर्तियाँ रखी गई हैं।

इससे पूर्व जागेश्वर से एक कि.मी. पहले डंडेश्वर मंदिर समूह हैं ये मंदिर जागेश्वर के काफी बाद के प्रतीत होते हैं। ये अभी नए हैं परंतु शिल्प जागेश्वर की ही तरह है।

वापसी में चितई में प्रसिद्ध गोलू देवता का मंदिर देखा जिसमें हजारों घंटियाँ बँधी हैं और श्रद्धालुओं के पत्र लटके हैं। बताते हैं इस मंदिर में पत्र में अपनी इच्छा लिखकर रखने से गोलू देवता उसे पूरी करते हैं। गोलू देवता पिथौरागढ़ के राजा हुए हैं जिन्हें देवता के रूप में पूजा जाता है। वे अपने समय न्याय प्रिय राजा थे और आज भी लोगों का विश्वास है कि वे सभी के साथ न्याय करते हैं।

जागेश्वर भ्रमण के बाद दो बजे हम अल्मोड़ा पहुँच गए थे।

आज ही सात बजे रात को अल्मोड़ा से देहरादून के लिए चले और रात को काठगोदाम में कुमाऊँ मंडल विकास निगम के बंगले में रुके। अल्मोड़ा से काठगोदाम तक का सफर रात में ही तय किया। गाड़ी में संगीत सुना और कई मुद्दों जिनमें प्राथमिक शिक्षा ही महत्वपूर्ण रहा पर चर्चा होती रही।

11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर, 2007 तक

दिनांक 11 अक्टूबर से 14 अक्टूबर तक घर पर ही रहा। अल्मोड़ा से आने के बाद स्वास्थ्य ठीक नहीं रहा। हल्का बुखार रहा और कोई काम करने का उत्साह नहीं बन रहा। इन चार दिनों प्राकृतिक चिकित्सा— नेति, बमन, कुंजर क्रिया, स्टीमबाथ और गीली पट्टी की लपेट ली। इससे काफी राहत मिली।

11 और 12 को भड़कोट गाँव में मतदाता सूची के सत्यापन हेतु गया। परंतु लोग घरों में नहीं मिले। सभी लोग या तो खेतों में गए हैं

या दूर डाँडों में भाँग लगाने गए हैं। कफल्वाणू में चंदनसिंह के साथ बैठकर मतदाता सूची में लगी फोटुओं की पहचान कराई।

13-14 को घर पर ही रहा। अखबार पढ़ा। और एक-दो पुरानी पत्रिकाएँ पलटी। साथ ही डायरी अपडेट की।

15 अक्टूबर, 2007

आज स्कूल नहीं गया। आज सी.आर.सी. में मासिक बैठक और टी.एल.एम. मेला था। टी.एल.एम. कोई भी बनाकर नहीं लाया। सी.आर.सी. समन्वयक ने डाक जमा की और प्रथम संस्था द्वारा दी गई हलचल आदि पुस्तकें बाँटी।

मीटिंग दो बजे तक चली। दो बजे के बाद घर पर ही रहा। क्यारियाँ बनाई और तराई की। पत्रिकाएँ पढ़ीं और एक-दो पत्र लिखे।

16 अक्टूबर, 2007

आज साढ़े नौ बजे स्कूल पहुँचा। दस बजे तक सारे बच्चों की प्रतीक्षा की। प्रार्थना तक 28 बच्चे उपस्थित हुए। भोजन माता अभी तक नहीं आई थी। मुझे आज भी मतदाता सूची के सत्यापन हेतु घर-घर भ्रमण पर जाना है। इसलिए सूचना पट पर इस आशय की सूचना लिख कर मैंने बच्चों को दो-दो पैकेट बिस्कुट बाँटे और उनकी छुट्टी कर दी और बी.एल.ओ. कार्य हेतु सटियालीधार की तरफ चल दिया। सटियाली में सूचना मिली कि गाँव में श्री लाखीराम चाचा जी की मृत्यु हो गई है। इसलिए मैं सीधे घर चला गया और उनकी अंत्येष्टि में शामिल हुआ।

केवल अंत्येष्टि में शामिल होने की बात होती तो शायद मैं न जाता पर क्योंकि मैं बच्चों का छोड़ चुका था इसलिए बी.एल.ओ. कार्य को एक दिन के लिए स्थगित कर दिया। आज स्कूल से चलते हुए बहुत पीड़ा हुई। बेचारे बच्चे पीठ पर बस्ता लटकाए मासूमियत से बिना कोई प्रतिक्रिया किए वापस चले गए। उनमें समझ होती और उनके पास अधिकार होता तो वे कम से कम मुझसे जरूर पूछते कि आखिर हमारे साथ यह अत्याचार क्यों हो रहा है? क्या हमें अपने स्कूल में महज दो अध्यापक पाने का अधिकार भी नहीं है? मेरे बच्चे छुट्टी होने पर खुश नहीं होते, जैसी आमतौर पर धारणा है कि बच्चे स्कूल आना ही नहीं चाहते। पर मैं भी विवश बच्चों को घर जाते देखता रहा। मेरी भी मजबूरी है। सरकार का नौकर जो हूँ। सरकार जिस काम को महत्वपूर्ण समझेगी वही काम मुझसे प्राथमिकता के आधार पर कराएगी। पटवारी जी अट्टाइस सितंबर से कई बार स्कूल में आ चुके हैं और कह चुके हैं कि, "स्कूल में ताले लटका दो पर मतदाता सूची का काम भली प्रकार पूरा होना चाहिए। जब तक आप बी.एल.ओ. हो तब तक आप चुनाव आयोग के कर्मचारी हो। इसलिए इसी काम को किसी भी कीमत पर पहले पूरा करना है।" खुद एस.डी.एम. साहब मीटिंग में इसी तरह का आशय प्रकट कर चुके हैं।

बहरहाल आज तो कोई काम नहीं हो सका परंतु 31 अक्टूबर तक अब स्कूल बंद ही रहेगा। क्योंकि व्यवस्था में भी अब कोई नहीं आता। जूनियर हाई स्कूल भड़कोट से भी एक अध्यापक पंचायत की मतदाता सूची तैयार करने में लगे हैं। फिर व्यवस्था वाले

लोग औपचारिकताएँ पूरी करते हैं। बच्चों की स्थिति तो ज्यों की त्यों बनी रहती है।

अंत्येष्टि से शाम को पाँच बजे पहुँचा। थोड़ी देर अखबार पढ़ा, क्यारियाँ ठीक की और थोड़ी देर टहला। आठ बजे बिजली आई तो डायरी लिखी।

17 अक्टूबर, 2007

आज पौने दस बजे विद्यालय पहुँचा। लगभग पच्चीस बच्चे उपस्थित हो गए थे। दस बजे प्रार्थना कराई। भोजन माता आज भी नहीं आई। मुझे आज भी फोटो युक्त मतदाता सूची के सत्यापन एवं पुनरीक्षण कार्य हेतु घर-घर जाना है। बच्चों की छुट्टी कर दी और ब्लैकबोर्ड पर सूचना लिख दी। आज डौरा मजरा का सत्यापन कार्य किया। कल की भी छुट्टी बोल दी है। फिर वही पीड़ा और बेबसी का दर्द।

18 अक्टूबर, 2007

आज स्कूल गया। ग्यारह बजे तक स्कूल में रहा। उसके बाद बच्चों की छुट्टी की और खुद मतदाता सूची के पुनरीक्षण कार्य हेतु लादू गया। बिमला का सहयोग लिया और लादू मजरा में सभी मतदाताओं की पुष्टि की। कोई भी मतदाता फोटो देने के लिए तैयार नहीं हो रहा है। कई लोग खेती के काम के लिए खेतों में गए हैं और या तो बहुत बुजुर्ग या बच्चे ही घर पर मिल रहे हैं इसलिए पुनरीक्षण कार्य में विलंब हो रहा है। दो बजे तक गाँव में रहा और उसके बाद धौन्तरी आकर उत्तरकाशी चला गया। 18 रात को आश्रम में रहा और घनश्याम जी से कई मुद्दों पर चर्चा होती रही।

बाल पत्रिका और मैं

कोई बाल पत्रिका उठाता हूँ
जब कभी हाथ में
लौट पड़ता हूँ पीछे
बहुत दूर अपने अतीत में

उभरते हैं-

दृश्य दर दृश्य अनेक
मानस पटल में
पार्क, सीसा, झूला
धूल से सने कपड़े
सितोलिया और लुकाछिपी के खेल
आज कुट्टी और कल फिर मेल

माँ का दुलार, पिता की फटकार
कितनी ही उछलकूद,
बस्ते का बोझ
होमवर्क का टेंशन और
गुरु जी की डॉट और
कभी पिकनिक की ठाठ।

याद आता है,
और भी बहुत कुछ अपना
क्रोमल बचपन और
वह मनमोहक संसार
जिसे पा नहीं सकते अब
करने पर प्रयत्न हजार।

19, 20, 21 अक्टूबर, 2007

19 व 20 अक्टूबर को अष्टमी एवं नवमी का अवकाश रहा। 21 अक्टूबर को विजयादशमी का अवकाश था। 18 से 20 तारीख तक उत्तरकाशी रहा। कुटेटी में लगी प्रदर्शनी में सहयोग दिया। 21 की प्रातः घर गया। आज डी.टी.एच. कनेक्शन लिया और उनके प्रतिनिधि लड़के ने कमरे पर कनेक्शन लगा कर दिया। वह लड़का भी आज गाड़ी छूटने के कारण मेरे साथ ही रहा।

22 अक्टूबर, 2007

आज दिनांक 22 अक्टूबर को स्कूल गया। ग्यारह बजे तक स्कूल में रहा। ग्यारह बजे बाद त्वारखा गाँव और थाती बस्ती जाकर मतदाता पुनरीक्षण कार्य किया। घर पर आकर उन मतदाताओं की सूची बनाई जिनके फोटो अपूर्ण हैं।

9 सितंबर, 2008

आज दिनांक 9 सितंबर को यह खबर थी कि डी.एम. साहब दौरे पर आ रहे हैं। नए डी. एम. बहुत सख्त हैं और कई अध्यापक/ अध्यापिकाओं को एम.डी.एम. में लापरवाही को लेकर निलंबित कर चुके हैं या उनका वेतन काट चुके हैं। तो आज पंचायत चुनाव को लेकर उनके दौरे पर आने की संभावना पूरी थी। मैं भी आज नौ बजे स्कूल में पहुँच गया था। कारण मैंने भी एक सितंबर से एम.डी.एम. रजिस्टर नहीं भरा था। क्योंकि मैं दो सितंबर से सात सितंबर तक चुनाव ड्यूटी में नौगाँव रहा। तो स्कूल में जाते ही मैंने बच्चों की हाजिरी गिनी और रजिस्टर पूरा किया। इतने में बच्चे स्कूल आ गए थे। क्योंकि हमारे स्कूल में मतदान बूथ है इसलिए मैंने बच्चों से स्कूल के आस-पास की झाड़ियाँ कटवाई, कमरों की सफाई कराई, शौचालय खुद साफ किया, नालियाँ साफ करवाई, पाइप लाइन की रिपेयरिंग करवाई और भोजन माता से रसोई साफ करवा कर व्यवस्थित करवाई। इस पूरे काम में बारह बज गए। आज केवल 10 बच्चे उपस्थित थे। धूप तेज होने लगी है इसलिए मध्य अक्टूबर तक बच्चों की उपस्थिति अब बहुत ही कम रहेगी क्योंकि भाँग लगाने का सीजन शुरू हो गया है। स्कूल के वातावरण और डॉक्यूमेंटेशन को लेकर तो मैं निश्चित रहता हूँ पर बच्चों की उपस्थिति को लेकर मैं आज डरा हुआ था। अगर डी.एम. साहब स्कूल में इतनी कम उपस्थिति देखते तो निश्चित मेरे स्कूल के बाकी दिनों की उपस्थिति को संशय की दृष्टि से देखा जाता। शैक्षणिक काम को कम ही अधिकारी देखते हैं। और बच्चों से दो प्यार भरी बातें करना या स्कूल के स्टाफ के साथ कुछ अनौपचारिक बातचीत करना भी अधिकारियों की आदत में शुमार नहीं होता। एक कारण यह भी है कि अधिकारियों के भ्रमण को लेकर शिक्षक/शिक्षिकाएँ हमेशा डरे हुए रहते हैं।

दो बजे पोलिंग पार्टी आ गई थी। भोजन के बाद डेढ़ बजे मैंने बच्चों की छुट्टी कर दी थी। डी.एम. साहब नहीं आए तो मैंने भी राहत की साँस ली।

मैंने पोलिंग पार्टी को आवश्यक सामान दिया। उनके लिए रसोइए की व्यवस्था करवाई और उन्हें स्कूल की चाभी सौंप कर चार बजे घर के लिए चल दिया। पाँच बजे गाँव गया और अपने गाँव में अपने पक्ष के ग्राम प्रधान के प्रत्याशी के लिए वोट डालने के लिए गाँव के लोगों को प्रेरित किया।

रात बारह बजे तक चुनाव प्रचार में ही लगा रहा। आज बारह बजे सोया।

10 सितंबर, 2008

आज आराम से आठ बजे उठा। दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर वोट देने गया। वोट देकर कमरे पर धौंतरी आया। दिन में सौरभ सर से फोन पर बात हुई। मेरी योजना है कि 15 दिन की छुट्टी लेकर अपना छूटा हुआ लेखन कार्य पूरा करूँगा। यह बात सौरभ सर को बताई तो उन्होंने कहा कि मेरे पास आकर आप अपना लेखन कार्य कर सकते हो। मैंने हामी भरी शायद उनके पास जाकर ही यह काम करूँगा। पहले भी मैं उनके साथ रहकर कुछ लेख लिख चुका हूँ। उनके पास जाने से पढ़ने को पर्याप्त किताबें भी मिल जाएँगी। दिन में ही अध्यापक के नाम पत्र के कुछ और पन्ने पढ़े। रात को ही डायरी लिखी, थोड़ी देर पढ़ा और ग्यारह बजे सोया। आज का दिन सामान्य रहा।

15-16 अक्टूबर 2008

15-16 अक्टूबर 2008 को लॉनिंग गारंटी कार्यक्रम के अंतर्गत आयोजित फीड बैक कार्यशाला में बी.आर.सी. दुण्डा में रहा।

कार्यशाला में के.आर.शर्मा से मुलाकात हुई। शर्मा जी के सवाल जो दिमाग में हलचल पैदा कर रहे थे—शिक्षक आमतौर पर किसी भी कार्यशाला में कम रुचि लेते हैं। संदर्भदाताओं को शिक्षकों से किसी भी विषय पर अपनी राय व्यक्त करवाने के लिए आवश्यकता से अधिक बोलना पड़ता है, उन्हें उकसाना पड़ता है। प्रतिभागियों की चुप्पी संदर्भदाताओं के लिए बेचैनी पैदा करती है। स्वतंत्र चिंतन के लिए प्रतिभागियों के बीच माहौल बनाना काफी मेहनत भरा काम होता है।

कार्यशाला में जो मैं पकड़ पाया –

1. बच्चे की गलती को गलती न मानना।
2. बच्चा अगर हमारी दृष्टि में सवाल का सही जवाब दे रहा है तो हम इतना भर संतुष्ट हो पाते हैं कि बच्चा उस समस्या या प्रश्न विशेष को हल कर पा रहा है। इससे अधिक बच्चे के बारे में हम उसके सही जवाब से कुछ भी नहीं जान पाते। यही स्थिति तब होती है जब बच्चा किसी प्रश्न को हल करने का प्रयास ही नहीं करता और उसे अनछुआ छोड़ देता है। परंतु गलत जवाब या आंशिक सही उत्तर की स्थिति में बच्चे के बारे में बहुत कुछ जान पाते हैं।

आमतौर पर हम बच्चे के गलत जवाबों को कभी गौर से नहीं देखते और न ही उसके उत्तरों का विश्लेषण करते हैं। जबकि हमें उसके गलत जवाबों (हमारी दृष्टि में) से बहुत से तथ्यों का पता चलता है।

17 अक्टूबर करवाचौथ का अवकाश। 18 को स्कूल में मतदान बूथ है। स्कूल गया और मतदान पार्टी के लिए आवश्यक सामान कुर्सी, मेज आदि रखे और चाभी पड़ोस में दे दी।

18 को प्रधान का चुनाव था। जी.आई.सी.कमद गया। ब्लूप्रिंट निर्माण कार्यशाला के लिए जूनियर हाईस्कूल भड़कोट के लिए व्यवस्था आदेश बनवाया। प्रधानाचार्य जी विद्यालय में नहीं थे इसलिए उनके घर पर जाकर आदेश पर हस्ताक्षर करवाए।

19 को ब्लूप्रिंट निर्माण कार्यशाला में प्रतिभाग के लिए घर से आठ बजे चला और शाम को छह बजे ऋषिकेश पहुँचा। धर्मशाला में रुका।

लोग क्या कहेंगे

मन करता है

रहूँ खड़ी खिड़की के पास, देर तक
और निहासूँ

राह गुजरते आदमियों के झुण्ड को
कूड़ा बीनते किसी काले-कलूटे बच्चे को
और आसमान में उड़ते बादल को
पर सोचती हूँ लोग क्या कहेंगे?

मन करता है

निकलूँ चार कदम घर से बाहर
और बतियाऊँ

किसी बिन माँ के बच्चे से
सूने आँगन में बैठी किसी बूढ़ी माँ से
या सन्नाटा ओढ़े किसी बूढ़े बाप से
पर सोचती हूँ
लोग क्या कहेंगे?

मन करता है

कूद पड़ूँ घोंसले से बाहर
उतर आऊँ टहनियों पर
और दूर तक आसमान में
भर लूँ एक लम्बी उड़ान
पर सोचती हूँ
लोग क्या कहेंगे?

मन करता है

करूँ प्रथम प्रणय को याद
गाऊँ कुछ रुँधे गले से
लूँ बाँध धुँधरू पाँवों में
और नाचूँ जी भरकर
आँगन में

पर सोचती हूँ

लोग क्या कहेंगे?

Some Abbreviations

- एन.पी.आर.सी. – न्याय पंचायत रिसोर्स सेन्टर
सी.आर.सी. – क्लस्टर रिसोर्स सेन्टर
प्र.अ. – प्रधानाध्यापक
स.अ. – सहायक अध्यापक
टी.सी. – ट्रान्सफर सर्टिफिकेट
एम.डी.एम. – मिड डे मील
एम.टी.–मास्टर ट्रेनर
डी.पी.ई.पी. – डिस्ट्रिक्ट प्राईमरी एजुकेशन प्रोग्राम
टी.ए. – ट्रेवलिंग एलाउंस
डी.ए. – डेली एलाउंस
बी.एस.ए. – बेसिक शिक्षा अधिकारी
बी.आर.सी. – ब्लॉक रिसोर्स सेन्टर
डिप्टी बी.ई.ओ. – डिप्टी ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर
डी.ई.ओ. – डिस्ट्रिक्ट एजुकेशन ऑफिसर
डी.पी.ओ. – डिस्ट्रिक्ट प्रोजेक्ट ऑफिसर
जे.ई. – जूनियर इंजीनियर
बी.एल.ओ. – बूथ लेवल ऑफिसर

अजीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का स्पष्ट उद्देश्य है—न्यायसंगत,समानता पर आधारित,मानवीय तथा टिकाऊ समाज के निर्माण में उल्लेखनीय योगदान देना। प्रयास है कि शिक्षा तथा उससे संबंधित विकास के क्षेत्रों में बेहतर कार्य में सहायक होने वाले ज्ञान के सृजन के साथ-साथ प्रतिभाओं का विकास भी हो। विश्वविद्यालय शिक्षा तथा विकास के क्षेत्रों में सीखने-सिखाने के एक जीवंत और बहुआयामी वातावरण के माध्यम से उत्कृष्ट नेतृत्व विकसित करने के लिए प्रतिबद्ध है। विश्वविद्यालय अजीम प्रेमजी फाउंडेशन के काम का एक अभिन्न अंग है। विश्वविद्यालय फाउंडेशन की क्षेत्रीय संस्थाओं और उनके कार्यक्रमों के साथ गहराई से जुड़कर काम करता है। उसकी यह पहल उसे जमीनी वास्तविकताओं और व्यवहारिकताओं से सीधे-सीधे जोड़ती है।

अजीम प्रेमजी फाउंडेशन भारत में शिक्षा की गुणवत्ता और समानता के लिए बड़े पैमाने पर गहराई के साथ संस्थागत प्रभाव डालने के लिए कार्यरत है। यह कार्य शिक्षा तथा उससे जुड़े विकास के अन्य क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य,पोषण,शासन और पर्यावरण में किया जा रहा है। 2001 में अपनी स्थापना से लेकर अब तक फाउंडेशन के कार्यक्रम देश के 13 राज्यों के 20000 से अधिक स्कूलों तथा 25 लाख बच्चों तक पहुँचे हैं।

एक न्यायसंगत,समानता पर आधारित, मानवीय और टिकाऊ समाज के लिए





स्व. श्री हेमराज भट्ट,(22.06.1968 - 25.11.2008) प्रा.वि. भड़कोट, जनपद-उत्तरकाशी में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत थे। उनकी छवि एक कर्मठ अध्यापक के रूप में रही है। अपने सूक्ष्म कार्यकाल में बच्चों की शिक्षा के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते हुए उन्होंने व्यक्तिगत स्तर पर कई प्रयास किए।

उन्होंने अपने दैनिक अनुभवों को डायरी में समेटा है। उनकी यह डायरी राजकीय प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत एक अध्यापक के संकल्प एवं व्यवस्था के प्रति पैदा हुए समालोचनात्मक दृष्टिकोण की स्पष्ट छटा दिखाती है। डायरी के ये पन्ने एक कर्मठ अध्यापक की जद्दोजहद को भी हमारे समक्ष रखते हैं।



Azim Premji
University

Pixel Park, B Block, PESSE Campus,
Electronics City, Hosur Road
(Beside NICE Road), Bangalore 560100
www.azimpremjiuniversity.edu.in

